* श्रीसरस्वत्यै नमः *

अथ हवन पद्धति

भाषा टीका विधि सहित

जिसको—

पण्डित रामस्वरूप शर्मा

मेरठ निवासी ने पण्डितों के सुभीते के लिये बनाया

●

प्रकाशक एवं मुद्रक—

जवाहर बुक डिपो, भारतीय-प्रेस

गुजरी बाजार, मेरठ

संशोधित संस्करण] सम्वत् २०४८

अथ हवन पद्धति

(सामग्री लिख्यते)

घड़ा १, करवा १, सराई १, हंडला या लोटा १, दीवले १०, सरवे ४, केले के पत्ते ४, बन्दनवार ४, हार, फूल, दूब के नाल, कुशा, पान २०, आम की टहनी, (पंच पल्लव)—(पीपल का पत्ता, आम का पत्ता, गूलर का पत्ता, बड़ पत्ता, जामन का पत्ता)। लकड़ी ढाक की, आंक की, कत्थे की, चिरचिटे की, पीपल की, गूलर की, जांड की, कुशा, नारियल २, पचरंग १ रुपये का, हल्दी की गांठ १, सुपारी ४२, पांचों मेवा १ पाव, धूप १ रु० की, भुड़बल ५० पैसे की, सिन्दूर २५ पैसे का. सितावर २५ पैसे की, लाल चन्दन ५० पैसे का, सफेद चन्दन ५० पैसे का, शहद ५० पैसे का, चन्दोया लाल १ मीटर, अंगोछे २, धोती १, दही १०० ग्राम, दूध १०० ग्राम, गंगाजल, दाल उड़द की १०० ग्राम, पीली मिट्टी १ तसला, बताशे २ पाव, पेड़े १ पाव, चावल १ किलो (पूर्ण पात्र को), जौ १ किलो कलशे के नीचे को, लकड़ी ढाक की ५ किलो, पैसे २ रुपये के मिट्टी सात जगह की—(घुड़साल की, हाथी खाने की, बंबी की, नदी की, संगम की, कुन्ड की, राजद्वार की, गोशाला की), पंचरत्न—(स्वर्ण, हीरा, मोती, पुखराज, नीलम), (पंचगव्य)—गो मूत्र, गो गोबर, गो घृत, गो दधि, गो दुग्ध) आसन कुशा के ६, हुरसा १, केशर ५० पैसे, बूरा २०० ग्राम भोग को, मेवा पांचों बूरा में मिलाने को, रुई कच्ची २५ पैसे की, घी का दीपक, बक्स दियासलाई, कलावे की गुच्छी १, चन्दन की गांठ।

एकद्वित्रिचतुर्भागै ब्रीही आज्य यवस्तिलैः ।
चरुहोमे प्रकर्त्तव्यं यथा श्रद्धा च शर्करा ॥१॥

चावल आधा किलो, घी १ किलो, जौ १॥ किलो, तिल २ किलो, भोज पत्र ५० पैसे का, इन्द्र जौ ५० पैसे का, बूरा २५० ग्राम, पांचों मेवा श्रद्धा अनुसार।

* श्री गणेशाय नमः *

अथ हवन पद्धति

भाषा टीका

(प्रथम वेदीं रचयित्वा)

पहले पाधा मिट्टी की दो वेदी बनावे, एक हवन की और एक नवग्रह को। नवग्रह की उत्तर में और हवन की दक्षिण में। फिर उन दोनों वेदियों के चारों कोणों में चार केले के खम्ब और चार सरे खड़े करे और उनके चारों तरफ आम के पत्तों का बन्दनवार बांधे, फिर उन दोनों वेदियों के ऊपर (चन्दोया) लाल कपड़ा ताने। फिर उन वेदियों पर पाधा चून से चौक पूरे। फिर नीचे लिखे श्लोकों के प्रमाण से नवग्रह की जो वेदी है उस पर रङ्ग आकार सहित नवग्रह स्थापित करे।

अथ नवग्रह स्थापन विधिः

मध्ये तु भास्करं विद्याच्छशिनं पूर्व-दक्षिणे । लोहितं दक्षिणे विद्याद् बुधं पूर्वे तथोत्तरे ॥१॥

वेदी के बीच में सूर्य नारायण की स्थापना करे । पूर्व और दक्षिण के कोण में चन्द्रमा । दक्षिण में मंगल । पूर्व और उत्तर के कोण में बुध ॥१॥

उत्तरेण गुरुं विद्यात् पूर्वणैव तु भार्गवम् । पश्चिमे च शनिं विद्याद्राहुँ दक्षिण-पश्चिमे ॥२॥

उत्तर में बृहस्पति, पूर्व में शुक्र, पश्चिम में शनिश्चर, दक्षिण और पश्चिम कोण में राहु ॥२॥

पश्चिमोत्तरतः केतुं ग्रहस्थापनमुत्तमम् ॥

पश्चिम और उत्तर के कोण में केतु, इस प्रकार ग्रह स्थापन करे ।

भास्करं वर्तुलाकारम् अर्द्धचन्द्रं निशा-करम् ॥३॥

सूर्य का गोल आकार बनावे । चन्द्रमा का आधा गोल बनावे ॥३॥

त्रिकोणं मंगलंचैव बुधं च धनुराकृतिम् ।
पद्माकारं गुरुञ्चैव चतुष्कोणं चभार्गवम् ॥४॥

मंगल का तीन खूंट का आकार बनावे । बुध का धनुष जैसा, बृहस्पति का पद्म जैसा, शुक्र का चार खूंट का आकार बनावे ।

खड़्गाकृतिं शनिं विद्यात् राहुं चैव मकराकृतिम् ॥ केतुं ध्वजाकृतिं चैव इत्येता ग्रहमूर्त्तयः ॥५॥

शनि का तलवार, राहु का मच्छ तथा केतु का झण्डी जैसा । इस प्रकार देवताओं का आकार बनावे ।

भास्कराङ्गारकौ रक्तौ श्वेतौ शुक्रनिशाकरौ । हरिताङ्गो गुरुः पीतः शनिः कृष्णमस्तथैव च । राहुकेतु तथा धूम्रो, कारयेच्च विचक्षणः ॥६॥

सूर्य और मंगल में लाल रंग भरे । शुक्र और चन्द्रमा में सफेद रंग, बुध में हरा और बृहस्पति में पीला, शनिश्चर में काला, राहु और केतु में धुवें जैसा रंग भरे । विद्वान् पाधा इस रीति से वेदी बनावे ।

मण्डलादैशाने क्रमशः गणेशं ॐकारं श्री लक्ष्मीं ६४ योगिन्यः स्थापयेत् । पुनः गृहदेवीं उत्तरतः षोडशकोष्ठरूपाः षोडशमातरः ईशाने घटं स्थापयेत् । ततो घटसमीपे दीपं मण्डलाद् दक्षिणे कृष्णसर्पश्च स्थापयेत् ॥

नवग्रह की वेदी से ईशान कोण में क्रम से गणेश, ओंकार, श्री लक्ष्मी, ६४ योगिनी वेदी से उत्तर में सोलह कोठे की गौरी आदि सोलह माताएं बनावे । ईशान कोण में फूल का आकार बनावे । उसके ऊपर अन्न धरे, उस अन्न के ऊपर पानी का घड़ा भरकर धरे । उसमें गंगाजल व आम की टहनी गेरे । फिर उस पर पानी का करवा रक्खे । उसमें कलावा बांधे और करवे में लाल कपड़े में लपेट कर या कलावा बांधकर नारियल धरे । उसके पास सतिये का आकार बनावे । उस पर रोली के रंगे हुए चावल धरे । उन पर गणेश जी को स्थापित करे । उनके पास घी का दीवा बाले । मण्डप से दक्षिण में सर्प बनावे । यह ग्रहों के स्थापन करने की विधि है ॥

अथ पूजन-विधि

(यजमान प्राङ्मुख उपविश्य)

यजमान पूर्व की दिशा को मुंह करके तथा पाधा उत्तर को मुंह करके बैठे। यजमान पूजन की सब सामग्री पर गंगाजल का छींटा लगावे। (मन्त्र)

ओ३म् अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः ॥

(स्वस्तिवाचनं कृत्वा)

पाधा आदि यजमान से लेकर सब सज्जनों के हाथ में चावल देकर नीचे लिखे मन्त्र पढ़े ॥

ओ३म् मतिकरणं भयहरणं गिरिजाशरणं गणेशमभिवन्दे केदारेशनिवेशम् योगीशम् सर्वजगदीशम् ॥ ओ३म् सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥ धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रोगजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥ विद्यारम्भे विवाहे च

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रवेशे निर्गमे तथा संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥ वक्रतुण्डो महाकाय कोटिसूर्य्यसमप्रभ । अविघ्नं कुरु मे देव ! सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ ओ३म् गणानान्त्वा गणपतिᳯं हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिᳯं हवामहे । निधिनान्त्वा निधिपतिᳯं हवामहे व्वसोमम । आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम् ॥१॥ ॐ स्वस्ति न इन्द्रो व्वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्व वेदाः । स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्ट नेमिःस्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥२॥ ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः । पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥३॥ ॐ विष्णो रराटमसि व्विष्णोः श्नपत्रेस्थो विष्णोः । स्यूरसिव्विष्णो ध्रुवोऽसि व्वैष्णवमसि व्विष्णवेत्वा ॥४॥ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्य्यो देवता चन्द्रमा देवता व्वसवो देवता रुद्रो देवता आदित्यो देवताः ॥ मरुतो देवता विश्वे देवा

देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता व्वरुणो देवता ॥५॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ᳪ शान्तिः पृथिवी शान्ति रापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः । सर्व ᳪ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥६॥ ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद्भद्रंतन्न आसुव ॥७॥ ॐ एतन्ते देव सवितर्यज्ञम्प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे । तेन यज्ञ मव तेन यज्ञपतिन्तेन मामव ॥८॥ ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्जयस्य बृहस्पतिर्यज्ञमि-मन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ᳪ समिमन्दधातु । विश्वेदेवा स ऽइहमादयन्तामोम् प्रतिष्ठ । एष वै प्रतिष्ठा नामयज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यज-न्तेन सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति ओ३म् ॥९॥

(गणेशादिदेवानामुपरि अक्षतान् क्षिपेत्)

यजमान गणेश जी आदि सब देवताओं पर

चावल छोड़ दे। और हाथ में दक्षिणा, जल, चावल लेकर प्रतिज्ञा संकल्प करे।

(अथ प्रतिज्ञा संकल्पः)

ॐ तत्सद् विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ॐ नमः परमात्मने श्रीपुराणपुरुषोत्तमाय अद्य श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय प्रहरार्द्धे श्रीश्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मनवन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखंडे आर्य्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे पुण्यक्षेत्रे वेदोक्तफलप्राप्तिकामसिद्ध्यर्थं वर्तमान सम्वत्सरे अमुक सम्वत्सरे अमुकायने अमुक भास्करे अमुकगोलावलम्बनेऽमुकपक्षेऽमुक-तिथौऽमुकवासरेऽमुकगोत्रोत्पन्नो अमुकप्रवरे अमुकवेदिनो अमुकशाखिनो अमुक सूत्रिनो अमुकशर्म्माहं * सकलपापक्षयपूर्वक सकल-मंगलप्राप्त्यै सर्वानिष्ट निवारणार्थ सर्वत्र हर्षविजय द्विपदे चतुष्पदे पशुबांधवकामः

*(यदि ब्राह्मण हो तो शर्माहं, क्षत्रिय हो तो वर्माहं और वैश्य हो तो गुप्ताहं का उच्चारण करे।)

मम सकल मनोरथानुरूपायुकीर्ति यशोबल-धनधान्य पुत्रपौत्रादि वृद्ध्यर्थं गणपत्यादि पंचलोकपालानां नवग्रहादिदेवता ऽधिदेवता प्रत्यधिदेवता नामिंद्रादि दश दिक्पाला-नामिष्टदेवता कुल देवता सहितानामन्ये-षामपि देवानामावाहनपूर्वक पूजन करिष्ये ॥

(यजमानश्चतुर्ब्राह्मणवरण कृत्वा)

यजमान चार ब्राह्मणों का वरण करे।

४ अंगोछे, ४ पान, ४ सुपारी, ४ दक्षिणा, ४ कलावे की डोरी, चावल, रोली, फूल और ४ हार ये सब वस्तु पान के ऊपर रखकर यजमान अपने हाथ में लेकर संकल्प करे ॥

अद्येहेत्यादिऽमुकगोत्रोहं अमुक शर्म्माहं श्रीमहाकाली श्रीमहालक्ष्मीमहासरस्वती देवताप्रीत्यर्थं अस्मिन् श्रीदुर्गाहवनकर्मणि सांगताफलप्राप्त्यर्थं एभिर्गंधाक्षत पुष्पताम्बूल पुंगीफल दक्षिणावासोभिः अमुक गोत्रो-त्पन्नाम् सुपूजितान् वेदसंख्यकान् युष्मान् ब्राह्मणान् वरणे ॥

फिर यजमान उसी पान की रोली से उन चारों ब्राह्मणों के तिलक करे और यह मन्त्र पढ़े।

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च।
जगद्धिताय कृष्णायगोविंदाय नमो नमः॥

(रक्षाबन्धनम्) चारों ब्राह्मणों के पौंहची बांधे।

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षया ऽऽप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धा माप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥२॥ (ततः आचार्य वरणं) अंगोछे पर सब चीजें रखकर कर्म कराने वाले के वरण का संकल्प करे। अद्यामुकगोत्रोहं अमुकशर्माहं अस्मिन् श्रीदुर्गाहवन कर्मणि सांगताफल प्राप्त्यर्थं श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महा-सरस्वती देवताप्रीत्यर्थं एभिः गंधाक्षत पुष्प चन्दन ताम्बूल वासोभिः अमुकगोत्रोहंऽमुक प्रवरो अमुकवेदिनो अमुक शाखिनो अमुक सूत्रिनो अमुक शर्माणं* ब्राह्मणमाचार्य त्वेन त्वामहं वरणे।

---

* (यहाँ पर ब्राह्मण हो तो शर्माहं क्षत्रिय हो तो वर्माहं वैश्य हो तो गुप्ताहं का उच्चारण करे।)

पान की रोली से पाधा के तिलक करे ।

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मण हिताय च ।
जगद्धिताय कृष्णायगोविंदाय नमो नमः ॥
पौंहची बांधे । व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षया ऽऽप्नोति दक्षिणाम् । दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥ वृतोऽस्मीति प्रति वचनम् । यथाविहितं कर्म कुरु)

यजमान पाधा से कहे कि जैसा शास्त्र में लिखा है उस प्रकार सब कर्म कराओ ।

(करवाणीति ब्राह्मणो वदेत)

पाधा यजमान से कहे कि जिस प्रकार शास्त्र में लिखा है उसी प्रकार सब कर्म कराऊंगा ।

अथ रक्षाविधानम्

(यवान् कुशान् तथा दूर्वामक्षयतान् दधि-मिश्रतान् । ताम्बूलं गोमयं चैव कारयेत्ता-म्रभाजने)

जौ, कुशा, दूब के नाल, दही, चावल, गऊ का गोबर, पान, फूल, रोली इन सबको तांबे के बर्तन

में या मिट्टी की सरैंया में धरे फिर यजमान उस पात्र को अपने दोनों हाथों में रक्खे। (पाधा) नीचे लिखे मन्त्र पढ़े--

गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थ जम्बू फलचारुभक्षणम् । उमासुतं शोकविनाश-कारकं नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम् ॥१॥ नमो नमः शाश्वतशांतिहेतवे क्षमादया पूरित चारुचेतसे। गजेन्द्ररूपाय गणेश्वराय पुंसः परस्य प्रथमाय सुनवे ॥२॥ गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम् । विष्णुं रुद्रं श्रियं देवीं वन्दे भक्तया सरस्वतीम् ॥ स्थानक्षेत्रं नमस्कृत्य दिननाथं निशाकरम् । धरणीगर्भ संभूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम् । दैत्याचार्य्यं नमस्कृत्य सूर्यंपुत्रं महाबलम् । राहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः ॥ शुक्राद्यादेवताः सर्वामुनींश्च कथयाम्यहम् ॥ गर्गाचार्यं नमस्कृत्य नारदं मुनि सत्तमम् । वशिष्ठं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं महामुनिम्

पाराशरं तथा व्यासं सर्वशास्त्र विशारदम्
विद्याधिकाश्च ये केचित्केचिच्च तपोधिकाः
तान् सर्वान् प्रणिपत्याद्य यज्ञे रक्षंतु सर्वदा ॥८

यजमान ने जिन जिन ब्राह्मणों का वरण किया है वे सब ब्राह्मण अपने-अपने हाथों में चावल लेकर नीचे लिखे मन्त्र के प्रमाण से छोड़ें ॥

पूर्वे (पूर्व में) रक्षतु गोविन्द आग्नेयां (आग्नेय कोण में) गरुड़ध्वजः । याम्यां (दक्षिण में) रक्षतु वाराहो नारसिंहस्तु नैऋते (नैऋत्य में) केशवो वारुणां (पश्चिम में) रक्षेद्वायव्यां (वायव्य कोण में) मधुसूदनः । उत्तरे (उत्तर में) श्रीधरो रक्षे दैशाने (ईशान में) तु गदाधरः ॥ शंखं रक्षतु यज्ञाग्रे (वेदी के आगे) यज्ञपृष्ठे (वेदी के पीछे) च पद्मकम् । वाम पार्श्वे (वेदी के बाईं तरफ) गदा रक्षेद्दक्षिणे च सुदर्शनम् ॥ (वेदी के दाहिनी तरफ) उपेन्द्रो रक्षतु (आकाश में) ब्रह्माणमाचार्यं पातु (पृथ्वी में) वामनः । अच्युतः पातु ऋग्वेद यजुर्वेदमधोक्षजः ॥

कृष्णोरक्षतु सामानि अथर्वाणं तु माधवः ।
यजमान सपत्नीकं पुण्डरीकाक्षश्च रक्षतु ।

फिर कुटुम्ब सहित यजमान के ऊपर चावल छोड़े ।

भो ब्राह्मणाः अस्य यजमानस्य गृहे
स्वस्तिं वाचन्यतो ब्रुवन्तु स्वस्तिताम् ।।३।।
(ओ३म् स्वस्तिताम्) इसको तीन बार कहे ।।

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्श्रवाः स्वस्ति नः
पूषा विश्वे वेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यों अरिष्ट-
नेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।।१।।

भो ब्राह्मणाः अस्य यजमानस्य गृहे
पुण्याहं वाचयन्तो ब्रुवन्तु पुण्याहम् ।।२।।
(ओ३म् पुण्याहम्) इसको तीन बार कहे ।।

ॐ पुनन्तु मां दिवजनाः पुनन्तु मनसा धियः ।
पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदःपुनीहि माम् ।
भो ब्राह्मणाः अस्य यजमानस्य गृहे कल्याणं
वाचयन्तो ब्रुवन्तु कल्याणम् ।।२।।
(ओ३म् कल्याणम्) इसको तीन बार कहे ।

यथेमाम् वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः ।

ब्रह्मराजन्याभ्याᳯं शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च । प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृद्धतामु-पमादोनमतु ॥१॥ भो ब्राह्मणाः अस्य यजमानस्य गृहे ऋद्धि वाचयन्तो ब्रुवन्तु ओं ऋद्धिताम ॥२॥ सत्रस्य ऋद्धिरस्य गन्म ज्योतिरमृता अभूम् । दिवम् पृथिव्या ऽध्यारुहात्मा विदाम देवान्त्स्वर्ज्योतिः ॥३॥ भो ब्राह्मणाः अस्य यजमानस्य गृहे पुष्टिं वाचयन्तो ब्रुवन्तु पुष्टिताम् ॥४॥ रायश्चमे पुष्टश्चमे पुष्टिश्चमे विभुश्च मे प्रभुश्च मे पूर्णञ्चमे पूर्णतरञ्चमे कुर्यञ्च मे क्षितिश्च मे ऽन्नश्चमे क्षुञ्च मे यज्ञेन कल्पताम् ॥ ओं रक्षोहणं बलगहनवैष्णवीमुद महतं बल-गमुत्किरामियं मिनिष्यो समात्ये निचखाने दमहतं बलगमुत्किरामिय मे सबन्धुर्मम सबन्धुर्निचखाने दमहतं बलगमुत्किरामियं

सजातो मम सजातो निचखाने दमहृतं बलगमुत्किरामियम् समानो मम समानो निचखाने दमहृतं बलगमुत्किरामियम् ॥ (आचार्यः पूर्वमेव सर्षपान् गृहीत्वा मन्त्र मुच्चारयेत्)

कर्म कराने वाला आचार्य भी अपने हाथों में सरसों के दाने लेकर यह मंत्र पढ़ यजमान के ऊपर छोड़े।

ओं यदा बध्नन् दीक्षायणा हिरण्य ँ शत- नीकाय सुमनस्य मानाः तन्म आबध्नामिशत शारदाऽऽयुष्माञ्च दृष्टिर्य यथासम् ॥

(यवान् कुशान्तथा दूर्वान् होमकुण्डे क्षिपेत्)

जौ, कुशा, दूब के नाल और गोबर उस पात्र में से निकाल कर हवन की वेदी के बीच में रख दे। (पाधा उस पात्र की रोली से यजमान के तिलक करे) ॥ (मन्त्र)

ओं आदित्या वसवो रुद्रा विश्वे देवा मरुद्गणाः तिलकं ते प्रयचच्छन्तु धर्मकामार्थ सिद्धये ॥१॥

निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर पौंची बांधे--

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः ।
तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल ॥

(गणेशाद्योवाहनं पूजनं च कृत्वा)

यजमान गणेश जी आदि सब देवताओं का आह्वान पूजन करे ।

(गणेशाह्वानमक्षतान् गृहीत्वा)

यजमान के हाथ में चावल देकर पाधा यह मंत्र पढ़े–

ओं विनायकं महत्पुण्यं सर्वदेवनमस्कृतम् ।
सर्वविघ्नहरं गौरीपुत्रमावाहयाम्यहम् ॥

गणेश जी पर चावल छोड़ देवे (पूजनम् कृत्वा) पूजन करे । (मन्त्रः)

भो गणपतिदैवत ! अत्र मण्डले इहागच्छ, इह तिष्ठ, मम यजमानस्य गृहे शुभं कल्याणं कुरु । गणपतये नमः । पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनम्, स्नानं, वस्त्रं, यज्ञोपवीतं, गंधाक्षतान्, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं, ताम्बूलं, पुंगीफलं दक्षिणाञ्च समर्पयामि नमो नमः ॥

पहले गणेश जी को स्नान करावे अर्थात् तीन आचमनी जल को भरके गणेश जी पर छोड़े या एक

पात्र में तीन आचमनी जल की भरके छोड़े फिर रोली के छींटे लगावे, चावल, फल, फूल, धूप, दीप, मीठा, वस्त्र, यज्ञोपवीत, पान सुपारी सब सामग्री चढ़ावे (प्रार्थना) हाथ जोड़े । या नीचे लिखा मन्त्र पढ़े--

नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमः गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमः विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः ॥

(पंचलोकपाल-पूजनम्)

गणेश जी के पास ही इनका पूजन करे ।

(ब्रह्माह्वानम्)

ब्रह्मा जी का आह्वान करे । (मन्त्रः)

ब्रह्माणं शिरसा नित्यं अष्टनेत्रं चतुर्मुखम् ।
गायत्री सहितं देवं ब्रह्म आवाहयाम्यहम् ॥१॥

ब्रह्मा जी पर चावल छोड़कर पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे, जिस प्रकार गणेश जी पर चढ़ाई है । (प्रार्थना) फिर हाथ जोड़े ॥ (मन्त्रः)

ओं ब्रह्म जज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः । सबुध्न्याउपमाअस्यविष्ठाः

सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥१॥

अर्थ--(पुरस्तात् प्रथमं) पूर्वकाल से ही प्रथम (जज्ञानं ब्रह्म) प्रकट हुए ब्रह्म को (सुरुचः सीयतः) उत्तम प्रकाशित मर्यादाओं से (वेनः विआवः) ज्ञानी ने देखा है। (सः) वही ज्ञानी (अस्य बुध्न्याः वि-स्थाः) इसके आकाश संचारी विशेष रीति से स्थित और (उपमाः) उपमा देने योग्य सूर्यादि को देखकर (सतः च असतः योनि) सत और असत के उत्पत्ति स्थान को भी (विवः) विशद करता है।

(विष्णोराह्वानम्)

केशवं पुण्डरीकाक्षं माधवं मधुसूदनम् ।
रुक्मिणीसहितं देवं विष्णुमावाहयाम्यहम् ॥१

पूजन करे, सब सामग्री चढ़ावे, फिर हाथ जोड़े। (मन्त्रः)

ओं इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ।
समूढमस्य पांसुरे ॥२॥

(शिवस्याह्वानम्)

ॐ शिवं शंकरमीशानं द्वादशार्द्धं त्रिलोचनम् ।
उमया सहितं देवम् शिवमावाहयाम्यहम् ॥३

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ॥ (मन्त्रः)

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवे नमः ।
बाहुभ्यामुत ते नमः ॥३॥

---

* जहां आह्वानम् ऐसा आवे पाधा यजमान के हाथ में चावल दे।

(ओंकाराह्वानम्)

आवाहयाम्यहं देवं ओंकारं परमेश्वरम् ।
प्रणवं त्रिगुणाधारम् प्रमेयं सनातनम् ।।४।।

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ।। (मन्त्रः)

ओंकार विन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ।
कामदं मोक्षदं चैव ओंकाराय नमोनमः।।४।।

(लक्ष्म्याह्वानम्)

क्षीर सागरसम्भूतां शरीरे विष्णुमाश्रिताम् ।
यजमानहितार्थाय लक्ष्मीमावाहयाम्यहम् ।।५

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ।। (मन्त्रः)

ॐ श्रीश्च लक्ष्मीश्च पत्न्यावहो रात्रे पार्श्वे
नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणा
मुम्मइषाण सर्वलोकम्मइषाण ।।५।।

(पुण्याह्वानम्)

सर्वविघ्नहरं देवं सर्वदेवेषु पूजितम् । भारतीं
ब्रह्मणः शक्ति पुण्या मावाहयाम्यहम् ।।६।।

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ।। (मन्त्रः)

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः ।

पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥६

(रक्तपुष्पाक्षतैः मध्ये सूर्याह्वानम्)

दिवाकरं सहस्रांशु ब्रह्माद्यैश्चसुरैर्नुतम् ।
लोकनाथं जगच्चक्षुः सूर्यमाह्वयाम्यहम् ॥७॥

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ॥ (मन्त्रः)

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेश यन्न-मृतम्मर्त्यञ्च । हिरण्ययेन सविता रथेना देवोयाति भुवनानि पश्यन् ॥

(आग्नेय्यां श्वेतपुष्पाक्षतः चन्द्राह्वानम्)

हिमरश्मिं निशानाथं तारिकापति मुत्तमम् ।
औषधीनां न राजानम् चन्द्रमावाह्याम्यहम् ॥

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ॥ (मन्त्रः)

ॐ इमं देवा असपत्न सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रि-याय । इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्र मस्यै विश एषवोऽमी राजा सोमोऽस्माकम् ब्राह्मणाना ᳪ राजा ॥

(याम्यां रक्तपुष्पाक्षतैः भौमाह्वानम्)

धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्तेजः समप्रभम् । कुमारं शक्तिहस्तं च भौममावाहयाम्यहम् ॥

पूजन करे फिर हाथ जोड़ें ॥ (मन्त्रः)

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् । अपाᳫं रेताᳫं सि जिन्वति ॥

मन्त्र का देवता अग्नि और ईश्वर है और इन्हीं के पक्ष में यह मन्त्र है ।

अर्थ--(अयम्) यह (अग्निः) अग्नि ! प्रकाशमान परमात्मा (मूर्द्धा) ऊर्ध्व गमनशील होने से उच्च-सर्वोच्च और (दिवःककुत) प्रकाश में सर्वोच्च है तथा जिस प्रकार बैल की टाट बैल के शरीर में सर्वोच्च होती है उसी प्रकार (पृथिव्याः) पृथ्वी आदि लोकों का (पति) स्वामी, पालक है और (अयाम्) कर्मों के अन्तरिक्ष के मध्य में (रेता ᳫं) जलों को, बीजों को (जिन्वति) पहुंचाता, जानता है ।

(ऐशान्यां पीतपुष्पाक्षतैः बुधस्याह्वानम्)

बुधं बुद्धिप्रदातारं सोमवंश विवर्धनं यजमान हितार्थाय बुधमावाहयाम्यहम् ॥४॥

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ॥ (मन्त्रः)

ॐ उद्बुध्य स्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सᳫंसृजेथामयं च । अस्मिन्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ॥

(इस मन्त्र का देवता अग्नि है) और यह मन्त्र हवन में अग्नि प्रदीप्त करने के समय का है। जैसा इसका अर्थ किया गया है।

अर्थ—हे (अग्ने) देवता अग्नि (उद्बुध्यस्व) प्रकट हो और (प्रतिजागृहि) खूब प्रकाशित हो। (अयं त्वं च) यह यजमान और तू (इष्टापूर्ते) यज्ञादि इष्ट तथा पूर्त कार्य को "शुभ और धमार्थ को" (सृजेथाम) उत्पन्न करो। (अस्मिन् सधस्थे) इस अधः सहित स्थान में तथा (अधि उत्तरस्मिन्) इससे भी उत्तम स्थान में ईश्वर करें कि (विश्वे देवा) सब विश्व के देव व विद्वान् (यजमानश्च) और यजमान (सीदत) बैठें।

(उत्तरे पीतपुष्पाक्षतैः बृहस्पत्याह्वानम्)

बुद्धि श्रेष्ठ गिरापुत्र देवानां च पुरोहितम्।
शुक्रस्य मंत्रिणं श्रेष्ठं गुरुः मावाहयाम्यहम्॥४॥

पूजन करे फिर हाथ जोड़े॥ (मन्त्रः)

ओं बृहस्पते ऽअतियदर्यो ऽअर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऽऋत प्रजात तदस्मासुद्रविणन्धेहिचित्रम्॥५॥

(पूर्वे श्वेतपुष्पाक्षतैः शुक्रस्याह्वानम्)

प्रविश्य जठरे जंतोनिष्क्रान्तः पुनरेवयः।
आचार्यमसुरादीनाम् शुक्रमावाहयाम्यहम्॥६

पूजन करे फिर हाथ जोड़े॥ (मन्त्रः)

ओं अन्नात् परिस्रुतो रसम्ब्रह्मणा व्यपिवत्

क्षत्रम्पयः सोमम्प्रजापतिः । ऋतेन सत्यमि-
न्द्रियं विपान ७ँ शुक्रमन्धसइन्द्रस्येन्द्रियमि-
दम्पयो मृतं मधु ॥

(पश्चिमे कृष्णपुष्पाक्षतैः शनेराह्वानम्)

प्रदीप्तवह्निवर्णाभं भिन्नाञ्जनसमप्रभम् ।
छायामार्तण्डसंभूतम् शनिमावाहयाम्यहम् ॥

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ॥ (मन्त्रः)

ओं शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु
पीतये । शंयोरभिस्रवन्तु नः ॥

मन्त्र का देवता सोम व जल है, शनि नहीं। (यह मन्त्र जल तथा सोम पक्ष में हैं न कि शनि पक्ष में। इनमें जिस शब्द को शनि मानते हैं वह "शं नः" शब्द है जो कि सन्धि होकर शन्नो हुआ है न कि शनि है।)

अर्थ—(देवी आपः) दिव्य जल (नः शं) हमारे लिए सुखकारी हो (अभिष्टये) और इष्ट प्राप्ति के लिए तथा (पीतये) पीने के लिये हो और (नः) हम पर (शंयोः अभि स्रवन्तु) शान्ति का स्रोत चलावे, हमारे लिये शान्तिप्रद वर्षा करे।

(नैर्ऋत्या धूम्र पुष्पाक्षतैः राहोराह्वानम्)

चक्रेण च्छिन्नमूर्द्धानम् विष्णुना च निरीक्षितम्।
सैंहिकेयं महाकायं राहुमावाहयाम्यहम् ॥

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ॥ (मन्त्रः)

ओं कयानश्चित्र आभुव दूती सदावृधः सखा । कया शचिष्ठया वृताः ॥८॥

इस मन्त्र का देवता इन्द्र है राहू नहीं ।

अर्थ--हे इन्द्र ! ईश्वर ! (कया) किस रीति से आप (नः) हमारे (सखा) मित्र (आभुवत) होओगे । उत्तर-(ऊती) रक्षा से प्रश्न (२)--(कया) किस (कृत्य) कर्म या वृत्ति से (चित्रः) विचित्र गुण कर्म स्वभाव होवे ? उत्तर--(शचिष्ठया) प्रज्ञायुक्त से । इस प्रकार (सदावृधः) सर्वदा बुद्धियुक्त होवे ।

(वायव्यां धूम्रपुष्पाक्षतैः केतोराह्वानम्)

ब्राह्मणः कुलसभूतम् विष्णुलोके भयावहम् ।
शिखिनन्तु महाकायम् केतुमावाहयाम्यहम् ॥९

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ॥ (मन्त्रः)

ओं केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्य्या अपेशसे । समुषद्भिरजायथाः ॥१०॥

इस मन्त्र का देवता आत्मा सूर्य है केतु नहीं। मन्त्र में जो केतुम् शब्द आया है उसका अर्थ प्रज्ञान है इसे केतु ग्रह समझना भूल है ।

अर्थ--(मर्या) हे मनुष्यों ! (अकेतवे) प्रज्ञान रहित रात्रि में सोये हुये प्राणी वर्ग के लिये (केतुम्) प्रज्ञान (कृण्वन्) करता हुआ और (अपेशसे) रूप रहित पदार्थ के लिए (पेशः) रूप करता हुआ यह आत्मा "सूर्य" (उषद्भि) ज्ञानयुक्त, दाहक किरणों से (सम् अजायथाः) उदय होता है ।

अथऽधिदेवता आह्वानं पूजनम्

जिन-जिन देवताओं का पूजन किया है सूर्य से केतु तक उनके दाहिनी तरफ अभिदेवताओं का फूल चावल लेकर आह्वान करे।

(मध्येरविदक्षिणेश्वेत पुष्पाक्षतैः शिवस्याह्वानम्)

त्रिनेत्रं भैरवाकारं पूजिते च सुरासुरैः उत्पत्ति स्थितिं कर्तारं शंभु मावाहयाम्यहम्।

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ॥ (मन्त्रः)

ओ३म् नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥

(अग्नेस्यांचन्द्रदक्षिणे रक्तपुष्पाक्षतैः पार्वत्याह्वानम्)

हिमपर्वतसंभूतां शरीरे शंभूमाश्रितां यजमान हितार्थाय उमामावाहयाम्यहम् ॥

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ॥ (मन्त्रः)

ओं अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमान

यति कश्चन । ससस्त्यः श्वकः सुभद्रकां काम्पीलदासिनीम् ॥

(याम्यांभौमदक्षिणे पीतपुष्पाक्षतैः स्कंदस्याह्वानम्)

सुरसेनापतिं देवं तारकस्य विनाशनम् ।
पार्वतीनन्दनं श्रेष्ठं स्कन्दमावाहयाम्यहम् ॥

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ॥ (मन्त्रः)

ओं यदक्रन्दः प्रथम यजमानः उद्यन्त्स मुद्रादुतवा पुरीषात् । श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहूउपस्तुतय म्महिजातन्ते अर्वन् ॥

(ऐशान्यांबुधदक्षिणे पीतपुष्पाक्षतैः विष्णोराह्वानम्)

शंखचक्र गदापाणिम् सुरारिजगत्प्रभु ।
संसारतारणं देवंविष्णुमावाहयाम्यहम् ॥

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ॥ (मन्त्रः)

ओं विष्णो रराट मसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णो स्यूरसि विष्णोध्रुवोसि । वैष्णव-मसिविष्णवेत्वा ॥

(उत्तरे गुरुदक्षिणेश्वेत पुष्पाक्षतैः ब्रह्मणोऽऽह्वानम्)

मुखं तेजः सम जाता अग्निदेवारत्तुब्राह्मणः ।
जगतसृष्टि सुरादीनां ब्रह्म आवाहयाम्यहम् ॥

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ॥ (मन्त्रः)

ओं आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायता-
माराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽति व्याधि
महारथो जायतां दोग्ध्रीधेनुर्वोढानड्वानाशुः
सप्ति पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठा सभेयो
युवावस्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे
निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नः
औषधय पच्यन्तां योगक्षेमे नः कल्पताम् ॥

(पूर्वेशुक्रस्य दक्षिणे पीत पुष्पाक्षतैः इन्द्रस्याह्वानम्)

देवनाथ सहस्राक्षं शक्तिहस्तं शचीपतिम् ।
पर्वतारिं महाबाहुं शुक्रमावाहयाम्यहम् ॥

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ॥ (मन्त्रः)

ओं सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भि सोमं पिव
वृत्रहा शूर विद्वान् जहि शत्रून्नपमृधो
नुदस्वाथा भयं कृणुहि व्विश्वतो नः ॥

(पश्चिमे शनेदक्षिणे कृष्णपुष्पाक्षतैः यमस्याह्वानम्)

सूर्य्यपुत्रं महाबाहु प्रेतेशं दण्डपाणिनम् ।
जन्तुनां त्रासकर्तारम् यममावाहयाम्यहम् ॥

पूजन तथा प्रार्थना करे ।। (मन्त्रः)

ओं असियमो अस्यादित्यो अर्वन्न सत्रितो गुह्येन व्रतेन । असि सोमेन संमया विपृक्त आहुस्ते स्त्रीणि दिवि बन्धनानि ।।

(नैऋत्यारराहु दक्षिणे धूम्रपुष्पाक्षतैः कालस्याह्वानम्)

यमं च महिषारूढ़ दण्डपाणिमहाबलम् ।
कृष्णाक्षं कृष्णवर्णं च कालमावाहयाम्यहम् ।।

पूजन कर हाथ जोड़े ।। (मन्त्रः)

ओं कार्षिरसि समुद्रस्यत्वाक्षित्या उन्नयामि ।
समापो अद्भिरग्म तसमोषधीभिरोषधीः ।।

(वायव्यांकेतु दक्षिणे रक्तपुष्पाक्षतैः गुप्ताह्वानम्)

धर्मराजहितं भृत्यं धर्माधर्मविचारकम् ।
अप्रत्यक्षविदं चित्रगुप्तमावाहयाम्यहम् ।।

पूजन कर हाथ जोड़े ।। (मन्त्रः)

ओं इन्धानास्त्वा शतꣳ हिमाद्युमन्तꣳ समिधिमहि । वय स्वन्तो व्वयस्कृतꣳ सहस्वन्तः सहस्कृतꣳ अग्नेसपत्न दम्भनदब्धासो अदाभ्यं चित्रावसोस्वस्तिते पारमशीयः ।।

अथ प्रत्यधिदेवता आह्वानं पूजनम्

अब इसी प्रकार प्रत्यधिदेवताओं का सूर्य से केतु तक उनके बाईं तरफ फूल, चावल लेकर आह्वान और पूजन करे ।

(मध्येसूर्यस्य वामे रक्तपुष्पाक्षतैः अग्न्याह्वानम्)

मुखं समस्त देवानां खाण्डवारण्यदाहकम् ।
पूजितं सर्वयज्ञेषु ह्यग्निमावाहयाम्यहम् ।।

पूजन कर हाथ जोड़े ।। (मन्त्रः)

ओ३म् अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ।।

इस मन्त्र का देवता अग्नि है ।

अर्थ—हे परमेश्वर ! (अग्निम्) प्रकाश स्वरूप (पुरोहितम्) सर्वव्यापक होने से सबके आगे वर्तमान (यज्ञस्य) यज्ञ के (देवम्) प्रकाशक (ऋत्विजम्) प्रत्येक ऋतु में पूजनीय (होतारम्) सबके दाता और उपदाता (रत्नधातमम्) समस्त रम्य पदार्थों को धारण करने वाले "आपकी" (ईडे) स्तुति करता हूँ ।

(आग्नेयांचन्द्रस्यवामश्वेत पुष्पाक्षतैः आपाम्याह्वानम्)

त्वमायुः सर्वसिद्धानां देवदानवरक्षसाम् ।
शुद्धिकृत्सर्ववस्तुनां आप आवाहयाम्यहम् ।।

पूजन कर हाथ जोड़े ॥ (मन्त्रः)

आपो अस्मान् मातरः शुद्धयन्तु घृतेन नो धृतप्वः पुनन्तु । विश्व छं हिरिप्रिं प्रवहति देवी रुदिदाभ्यः शुचिरा पूतराभिः ॥

(दक्षिणं भौम रक्तपुष्पाक्षतैः पृथिव्याह्वानम्)

विष्णुना लोकरूपेण जगतां पतिना धृताम् ।
क्षमायुक्तां धरित्रीं च पृथ्वीमावाहयाम्यहम् ॥

पूजन कर हाथ जोड़े ॥ (मन्त्रः)

ओं स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरानिवेशनी । यच्छानः शर्म सप्रथाः ॥ ओं भूरसि भूमिरसि ऽदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री पृथिवीं यच्छ पृथिवींद छं हपृथिवीं माहि छं सिः ॥

(ईशान्येबुधस्यवाम पीतपुष्पाक्षतैः विष्णोराह्वानम्)

श्रीधरं च गदापाणिम सुरारिं जगतप्रभुम् ।
संसारतारणं देवं विष्णुमावाहयाम्यहम् ॥

पूजन कर हाथ जोड़े ॥

ओं इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम् समूढ़मस्यपां सुरे ॥

इस मन्त्र का देवता इन्द्र है ।

अर्थ--(विष्णु) इन्द्र ! परमेश्वर ! (इदम्) इस जगत को (त्रेधा) पृथिवी, अन्तरिक्ष, द्युलोक इन तीन प्रकार (विचक्रमे) पुरुषार्थ युक्त करे या करता है (अस्य) और इस जगत के (पांसुरे) प्रत्येक परमाणु में (समूढ़ं) अदृश्य (पदम्) स्वरूप को (निदधे) निरन्तर धारण करता है ।

(उत्तरे गुरुवामे पीतपुष्पाक्षतैः इन्द्राह्वानम्)

शतक्रतुं महापुण्यं देवारिं बलनाशनम् ।
वज्रपाणिं महावीर्यं इन्द्रमावाहयाम्यहम् ।।

पूजन कर हाथ जोड़े ।।

ओं महाइन्द्रोवज्रहस्तः षोडशी शर्मयच्छतु हंतु पाप्मानं पयोऽस्मान् द्वेष्टि उपयाम गृहीतोऽसि महेन्द्रायत्वैषंते योनिर्महेन्द्रायत्वा ।। ओं सयोषा इन्द्रा सगणो मरुद्भिः । सोमं पिव वृत्रहा शूर विद्वान । जहि शत्रुन्नपमृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः ।।

(पूर्वे शुक्रस्य वामे पीतपुष्पाक्षतैः इन्द्रस्याह्वानम्)

इन्द्रपत्नीं महापुण्यां देवेन्द्र परमप्रियां ।
सर्वसिद्धिकरेन्द्राणीं देवा मावाहयाम्यहम् ।।

पूजन कर हाथ जोड़े ।। (मन्त्रः)

ॐ इन्द्र देवी विशी मरुतोऽनुवर्तमानो भवन्त्यर्थे-

न्द्रदेवी विविशो मानुषीश्चानुवर्तमानो भवतु ।।

(पश्चिमेशनेर्वामे श्वेतपुष्पाक्षतैः विधेराह्वानम्)

प्रजापतिं सुरश्रेष्ठं ब्राह्मणं कमलोद्भवम् ।
संसारसृष्टिकर्त्तारं विधिमावाहयाम्यहम् ।।

पूजन कर हाथ जोड़े ।।

ओं प्रजापतयो न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव । यत्कामास्ते जुहूमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।।

(नैऋत्यां राहोर्वामे कृष्णपुष्पाक्षतैः शेषस्याह्वानम्)

भुजङ्गमंडलाशीशं धरिणी धरणक्षमां
पातालनायकं देव शेषमावाहयाम्यहम् ।

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ।। (मन्त्रः)

ओं नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु ।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।।

(वायव्यां केतोर्वामे श्वेतपुष्पाक्षतैः ब्रह्मह्वानम्)

पितामहं सर्वदेवानां परब्रह्मस्वरूपिणः ।
व्यक्ताव्यक्तगुणं रूप ब्रह्म आवाहयाम्यहम् ।।

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ।।

ओं ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः

सुरुचो वेन आवः । सुबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः शतश्च योनिमसतश्चविवः * ।

दशदिग्पालानामाह्वानं पूजनम्

नवग्रह की जो वेदी है उसके चारों तरफ दसों दिशाओं में दस दिक्पालों का पूर्व से दक्षिण को आह्वान पूजन करे ।

(अक्षतान् गृहीत्वा इन्द्रस्याह्वानम्)

ऐरावतसमारूढं वज्रपाणिं महाबलम् ।
आश्रितंदिशि पूर्वस्यां इन्द्रमावाहयाम्यहम् ॥

पूर्व में चावल छोड़े ।
पूर्व दिशा में पूजन करे फिर हाथ जोड़े ॥

ओं त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ꣡ँ हवे हवे सुहव꣡ँ शूरमिन्द्र꣡ँह्वयामि शुक्रम्पुरुहूतमिन्द्र꣡ँ स्वस्तिनो मघवाधात्विन्द्रः ॥

इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ (अक्षतैः अग्नेराह्वानम्)

छागपृष्ठसमारूढं शक्तिहस्तं महाबलम् ।
आश्रितं दिशि चाग्नेय्यां अग्निमावाहयाम्यहम्

अग्निकोण में चावल छोड़कर पूजन करे ।

---

* इस मन्त्र का अर्थ पृष्ठ २१ मन्त्र १ पर किया जा चुका है ।

ओं अग्निदूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे देवां आसादयादिह ॥

अग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ (अक्षतैः यमस्याह्वानम्)

महिष पृष्ठसमारूढं दण्डहस्तं महाबलम् ।
आश्रितं दिशि याम्यां च यममावाहयाम्यहम् ॥

दक्षिण में चावल छोड़कर पूजा करे ।

ओं यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्यत्वा तपसे । देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु पृथिव्याः स ꣳ स्पृशस्पाहि अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि ॥

यम इहागच्छ इह तिष्ठ (अक्षतैः नैऋत्याह्वानम्)

महाप्रेत समारूढं खड्गहस्तम्महाबलम् ।
आश्रितं दिशि नैऋत्यां नैऋत्यमावाहयाम्यहम्॥

नैऋत्य कोण में चावल छोड़े और पूजन करे ॥

ओं एष ते नैऋत्येभागस्त्वं जुषस्व स्वाहा अग्निनेत्रेभ्यो देवेभ्यः पुरः सद्भ्यः स्वाहा यमनेत्रेभ्यो देवेभ्यो दक्षिणा सद्भ्य स्वाहा विश्वदेवनेत्रेभ्यो देवेभ्यः पश्चात्सद्भ्यः स्वाहा मित्रावावरुणनेत्रेभ्यो वामरुनेत्रेभ्यो वामदेवे-

भ्यः उत्तरा सद्भ्यः स्वाहा सोमनेत्रेभ्यो देवेभ्यः उपरिस्विद्भ्यो दुवः स्वतस्तेभ्यः स्वाहा ।

नैऋत्ये इहागच्छ इह तिष्ठ ।। (अक्षतैः वरुणाह्वानम्)

प्रेतपृष्ठ समारूढं खड्गहस्तं महाबलम् ।
वारुण्यां दिशमाश्रित्य वरुणमावाहयाम्यहम् ।।

पश्चिम में चावल छोड़ कर पूजन करें (मन्त्रः)

ओं वरुणस्योत्तम्भनमसिव्वरुणस्य स्कम्भस-र्ज्जनीस्थो वरुणस्य ऋतसदन्न्यसो वरुणस्य ऽऋतसदन मसि वरुणस्य ऽऋतसदनमासीद ।।

वरुणा इहागच्छ इहतिष्ठ । (अक्षतैः वायोराह्वानम्)

मृगपृष्ठ समारूढं खड्गः हस्तं महाबलम् ।
आश्रितं दिशि वायव्यां वायुमावाहयाम्यहम् ।।

वायव्य कोण में चावल छोड़ पूजन कर हाथ जोड़े ।।

ओं वातो वामनो वा गन्धर्वा सप्त विᳪ शतिः ते अग्ने अश्वमयञ्जस्ते अस्मिन् जवमादधुः । वायो इहागच्छ इहतिष्ठ ।

(अक्षतैः कुबेराह्वानम्)

मेषपृष्ठसमारूढं गदाहस्तं महाबलम् ।
उदीचीं दिशमाश्रित्य कुबेरमावाहयाम्यहम् ।।

उत्तर में चावल छोड़ पूजन कर हाथ जोड़े।

ओं कुविदंगयवमन्तोयवंचिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं विपूय इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये वर्हिषो नम उक्तिं यजन्ति ।। कुबेर इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

(अक्षतैः शिवस्याह्वानम्)

वृषपृष्ठमारूढं शूलहस्तं महाबलम् ऐशानीं दिशमाश्रित्य शिवमावाहयाम्यहम् ।।

ईशान कोण में पूजन करे फिर हाथ जोड़े ।।

ओं ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् । तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ।।

अर्थ--(इदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत) यह समस्त जगत अर्थात् सर्व चराचर जगत (ईशावास्यं) ईश्वर द्वारा आच्छादनीय है, सब जगत को ईश्वर रूप अनुभव कर (त्येन त्यक्तेन भुंजीथा) किसी के विशेष मोह में न फस सबके त्याग भाव से आत्मा का पालन कर (मा गृध कस्य स्विद्धनम्) धन विषयक अथवा पदार्थ विषयक इच्छा न कर।

ईशान इहागच्छ इहतिष्ठ ।। (अक्षतैः अनन्ताह्वानम्)

नागपृष्ठसमारूढं शूलहस्तं महाबलम् । पातालदिशमाश्रित्य अनन्तमावाहयाम्यहम् ।।

पश्चिम में नैऋत्य के बीच में चावल छोड़ पूजन करे।

ओं नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथ्वीमनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्य सर्पेभ्यो नमः॥

अनन्तदेवा इहागच्छ इह तिष्ठ॥ (अक्षतैः ब्रह्माह्वानम्)

हंसपृष्ठसमारूढं श्रुव हस्तं महाबलम्।
ब्रह्मणो दिशमाश्रित्य ब्रह्म आवाहयाम्यहम्॥

पूर्व और ईशान के बीच में चावल छोड़ पूजन करे।

ओं ब्रह्म जज्ञानम् प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः।
सुरुचोव्वेन आवः। सबुध्न्या उपमा
अस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्चविवः॥

ब्रह्म इहागच्छ इह तिष्ठ॥

(पूर्वे अष्ठवसुप्रपूजयेत्) पूर्व में अष्ठ वसु का पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे॥

(दक्षिणे एकादशरुद्रपूजनम्)

दक्षिण में जो ग्यारह शिव हैं उनका पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे।

(पश्चिमे द्वादशादित्यपूजनम्)

पश्चिम में जो बारह सूर्य्य नारायण हैं उनका पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे।

(विश्वेदेवास्तथोत्तरे)

उत्तर में विश्वेदेवा का पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे।

(वामपार्श्वे शेष द्विपदमाह्वयेत)

इनसे बाईं तरफ सर्प का आह्वान करे।

आवाहयामि देवेशं पातालतलवासिनम्।
सहस्रशिरसं नागं फणीमणि विराजितम्॥
कर्पूरविशदम नागं नागराजमहाबलम्॥
परोपकारनिरतमनंतं विष्णुवाहनम्॥आगच्छ
नागराज त्वं क्षेत्रेस्मिन् सन्निधौ भव॥

सर्प के ऊपर चावल छोड़ पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे फिर हाथ जोड़े।

ओं नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥

(अश्विन्यादिसप्त नक्षत्राणि स्थापयेत्पूर्व-वत् क्रमात्) अश्विनी आदि सात नक्षत्रों का पूर्व में स्थापन करे।

(पुष्यादि सप्त नक्षत्राणि दक्षिणे स्थापयेत्)

पुष्य आदि सात नक्षत्र दक्षिण में स्थापन करे।

(स्वात्यादि सप्तनक्षत्राणि पश्चिमे स्थापयेत्)

स्वाति आदि सात नक्षत्रों को पश्चिम दिशा में स्थापन करे।

(अभिजितादि सप्तनक्षत्राणि उत्तरे स्थापयेत्)

अभिजित् आदि सात नक्षत्रों को उत्तर दिशा में स्थापन करे।

(अश्विन्यादि नक्षत्राणां यन्धादिनां पूजनं कुर्यात्) आश्विनी आदि सब नक्षत्रों का रोली से पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे।

(नैऋत्यां नवपितृकं पूजयेत्)

नैऋत्य में नव पित्रों का पूजन करे॥

(सागरा: सप्त वायव्ये पूज्या:)

सात समुद्रों का वायव्य कोण में पूजन करे॥

(उत्तरे मरुत: पूज्या सप्तऋषीन्स्थापयेत्)

उत्तर में मरुत और वहीं सात मुनियों को स्थापन कर पूजन करे, हाथ जोड़े॥

कश्यपोऽत्री भारद्वाजो विश्वामित्रोऽथ गौत्तम:। यमदग्निर्वशिष्ठश्च सप्तैते मुनय: स्मृता:॥१॥ (एवप्रकारेण विष्कुम्भादियोगा: स्थापयेत्)

इसी तरह विषकुम्भ के साथ-साथ चारों दिशाओं में योगनियों को स्थापन कर पूजन करे ॥

(मेषादि द्वादश राशिभ्यो नमः)

इसी प्रकार मेष से तीन-तीन राशियों को चारों दिशाओं में स्थापन कर पूजन करे ॥

(बवादि करणेभ्यो नमः)

इसी प्रकार बवादि तीन-तीन करणों को चारों दिशाओं में स्थापन कर पूजन करे ॥

(उत्तरे ध्रुवाय नमः)

उत्तर में ध्रुव जी का पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे।

(दक्षिण अगस्त्याय नमः) दक्षिण में अगस्त्य जी का पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे ॥

अथ कलशस्थापनम्

अब कलश की पूजा करे ॥

(भूमिस्पर्शनम्)

कलशे के नीचे भूमि पर हाथ लगावे और यह मन्त्र पढ़े ।

ओं मही द्यौ पृथिवी च न इमं यज्ञ मिमिक्षताम् पितृतां नो भरीमभिः (यवान् क्षिपेत्)

कलश के नीचे जल छोड़े ।

ओ३म् औषधयः समवदंत सोमेन सहराज्ञा । यस्मै कृणोति ब्रह्मणस्त्व ॐ राजन् पारयामसि (पूर्वादि चतुर्दिशुकलशे चतुर्वेदान् सम्पूज्य)

कलश के चारों ओर चारों दिशाओं में चारों वेदों की पूजा करे ।

(ऋग्वेदमावाह्य) ऋग्वेद का पूर्व में ।

ओ३म् अग्निमीडे पुरोहितम् यज्ञस्य देवमृत्विजं होतारं रत्नधातमम् ।।

यह मन्त्र अग्नि तथा ईश्वर पक्ष में है किसी ग्रन्थ के सम्बन्ध में नहीं है तथा वेद नाम किसी ग्रन्थ का नहीं है, वेद नाम ज्ञान का है ।

(यजुर्वेदमावाह्य) यजुर्वेद का दक्षिण की ओर ।

ओ३म् इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायवस्थ देवो वः सविताः प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणु आप्यायध्वमघ्न्या अयक्ष्मा व स्तेन ईशत माघशॐसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि ।।

यह मन्त्र भी किसी ग्रन्थ (पोथी) के सम्बन्ध में नहीं है ।

(सामवेदमावाह्य) सामवेद का पश्चिम में ।

ओ३म् अग्ने आयाहि वीतये गृणानो हव्य दायये नि होता सत्सि बर्हिषि ।।

इस मन्त्र का देवता अग्नि, आत्मा ईश्वर है और यह मन्त्र इन्हीं के पक्ष में है ।

(अथर्ववेदमावाह्य)

अथर्ववेद का उत्तर दिशा में पूजन करे । (मन्त्र:)

ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्रवन्तु नः ।।

(चन्दनादि लेपनम्)

घड़े पर चन्दन, केशर आदि लगावे । (मन्त्र:)

ओ३म् आजिघ्रम् कलशं मह्या त्वा विशं त्विं दिवः पुनरुर्जा निवर्त्त स्वसानः सहस्रं-धूक्ष्वारुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः ।।

(मंत्रेण जलदानम्)

इस मन्त्र से गंगा जल गेरे । (मन्त्र)

ओ३म् वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भ सर्ज्जनास्थो वरुणस्य ऋत सदन्नयसि वरुणस्य-ऽऋत सदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीद ।।

(अश्वत्थपत्र प्रक्षेपः) फिर पीपल के पत्ते आदि * पंच पल्लव गेरे । (मन्त्रः)

ओ३म् अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता । गोभाज इत्किलासथयत्सनवथ पुरुषम् ।।

(पुनर्दूर्वाप्रक्षेपः) फिर दूब के नाल गेरे ।

ओ३म् काण्डात्काण्डात्प्ररोहंति पुरुषः पुरूषस्परि । एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ।। (कुशपत्राक्षेपणम्)

कुशा का पवित्रा गेरे । फिर मन्त्र पढ़े ।

ओ३म् पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रशवः उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः । तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम् ।। (पुंगीफलम्)

सुपारी गेरे । (मन्त्रः)

ओं याः फलिनीर्य्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः । बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चत्व थ्वं हसः ।।

(ताम्बूलम्) पान गेरे और यह मन्त्र पढ़े ।

---

* नोट---बड़, पीपल, गूलर, आम और जामुन के पत्ते ।

प्राणाय स्वाहा अपानाय ॥

(अथाम्रपल्लवम्) आम की टहनी गेरे ।

ओं अम्बे अम्बिके अम्बालिके न मानयति कश्चन स सस्त्य: श्वक: सुभद्रिकां काम्पील-वासिनीम् ॥

(पुष्पाणि तूष्णीं प्रक्षिपेत्)

फूल चुपके से छोड़ दे ।

(दक्षिणा-द्रव्यं क्षिपेत्) दक्षिणा गेरे ।

ओं हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत। सदाधार पृथिवीं द्यामु-तेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम् ॥

(*सर्वौषधी क्षिपेत्)

सर्वौषधी या शतावर गेरे । (मन्त्र:)

ओं या औषधी यः पूर्वा जाता देवेभ्य स्त्रियुगं पुरा । मनै नुबभ्रूणामहꣳ शतं धामानि सप्त च ॥

(परिधान्याक्षिपेत्) सतनजा गेरे ।

---

* नोट—मुरा, मांसी, वच, शिलाजीत, हल्दी, दारूहल्दी, सौंठ, चम्पा मोथा आदि, यदि ये न मिलें तो हल्दी की गांठ गेरे ।

ओ३म् तूश्च सिद्धार्थं कुष्टर जनीद्वयंलो ध्रमुस्ता लामज्जशैलफलनी मुरवासिमुक्ता इतिस्मृत्मुक्ता । धान्यमसि धिनुहि देवान्प्राणाय त्वो दानाय त्वा व्यानाय त्वा दीर्घा मनु प्रसितेमायुषे धान्दे वौवः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णत्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषो त्वामहीर्नापयोसि ।

(पुनः समुद्रजलदानम्)

फिर समुद्र का जल गेरे और यह मन्त्र पढ़े ।

ओ३म् समुद्राय त्वा वाताय स्वाहा सरिताय त्वा वाताय स्वाहा अना धृष्पायत्वा वाताय स्वाहा समुद्रायत्वा वाताय स्वाहा ॥

(धूपम्) धूप दे । (मन्त्रः)

ओ३म् धूरसि धूर्व्वन्तं धूर्व्व योस्मान् धूर्वयं वयं धूर्वामः । देवानामसि वह्नितमꣳ सस्नितमम्पर्यप्रिपतम् जुष्टतमं देवहूतम् ॥

(दीपं दद्यात्) दीप दिखावे । (मन्त्रः)

ओ३म् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्य्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा अग्नि-र्वर्च्चो ज्योतिवर्च्चः स्वाहा । सूर्य्ये वर्चो ज्योतिर्वचः स्वाहा । ज्योति सूर्य्यः सूर्य्या ज्योतिः स्वाहा ।

(नैवेद्यं दद्यात्) मीठा चढ़ावे । (मन्त्रः)

ओ३म् अन्नपतेऽन्नस्य नोदेह्य नमीवस्य शुष्मिणः प्रदातारं तारिष ऊर्ज्जं नो देहि द्विपदे चतुष्पदे ॥ (गन्धम्)

इस मन्त्र से रोली डाले । (मन्त्रः)

ओ३म् त्वा गन्धर्वाऽअखनोस्त्वामिन्द्रस्त्वा बृहस्पतिः । त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत ।

* इस मन्त्र से पंचरत्न गेरे । (मन्त्रः)

ओ३म् परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्र-मीत् । दधद्रत्नानि दाशुषे ।

---

* नोट—स्वर्ण, हीरा, मोती, पुखराज, नीलम यदि ये नहीं मिलें तो सोना ही डालना चाहिए।

इस मन्त्र से सप्तमृत्तिका डाले* । (मन्त्रः)

ओं स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरानिवेशनी यच्छानः शर्मसप्रथाः ।

(वस्त्रं दद्यात्) कपड़ा चढ़ावे । (मन्त्रः)

ओं पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापतः वस्तेव विक्रीणावहा इष मूर्जं ॐ शतक्रतो ॥

(प्रतिष्ठां कुर्य्यात्) चावल छोड़े ।

ओं एन्तते देव सवितर्य्यज्ञम्प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे तेन यज्ञमेव तेन यज्ञपतिन्तेन मामव ॥

ओं मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्ट यज्ञॐ समिमन्दधातु विश्वेदेवासऽ इह मादयन्तामों प्रतिष्ठ ॥

(श्रीफल पुष्पमालाम्)

नारियल व फूलों की माला पहिनावे । (मन्त्रः)

ओं श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्नि-

---

* नोट—घोड़े के नीचे की, हाथी के नीचे की, बम्बी की, नदी संगम की, कुण्ड की, राजद्वार की, गोशाला की, यदि ये न मिलें तो गो रज जरूर डालनी चाहिए ।

भूतानि त्वयि प्राणा:

इस मन्त्र से सप्तमृत्ति

ओं स्योना पृथिवी नो स्वयंत्वमेवासिविष्णुस्त्वं

यच्छान: शर्मसप्रथा: । दित्या वसवोरुद्रा विश्वे-

(वस्त्रं दद्यात्) कपड़ा त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेपि

ओं पूर्णा दर्वि परापत। त्वत्प्रसादादिम यज्ञ

वस्तेव विक्रीणावहा इष सान्निध्यं कुरु मे देव

(प्रतिष्ठां कुर्य्यात्) चावल। ब्रह्मणो निर्मित:

ओं एन्तते देव सवितय।। प्रार्थयामि च तं

ब्रह्मणे तेन यज्ञमेव तेन यज्ञप मे ।।

ओं मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्तृ-पूजनम्)

मिमं तनोत्वरिष्ट यज्ञंओं का पूजन करे ।

विश्वेदेवासऽ इह मादयन्ता सावित्री विजया

(श्रीफल पुष्पमाल स्वाहा मातरो

नारियल व फूलों की माला पुष्टिरस्तथा तुष्टि-

ओं श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यागादौ विनायक:

नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम यद्देवनिमित्त-

---

* नोट—घोड़े के नीचे की,हाथी के नीचे की,बम्बा के निमित्त हवन

कुण्ड की, राजद्वार की, गोशाला की, य

रज जरूर डालनी चाहिए ।

दुर्गा का आह्वान करे। (मन्त्रः)

ओं जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपा-
लिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा
नमो स्तुते।

दुर्गा की पुस्तक का पूजन करे, दक्षिणा नारियल
सब सामग्री चढ़ावे, फिर हाथ जोड़े।

ओं दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्रयदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोप-
कार करणाय सदार्द्रचित्ता (स्रुवपूजनम्)

स्रुवे का पूजन करे, सामग्री चढ़ावे, हाथ जोड़े।

ओं ब्रह्म जज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः
सुरुचो वेन आवः सबुध्न्या उपमा अस्य
विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्चविवः।

अथ कुशकण्डिका करणम्

फिर पाधा वेदी का संस्कार करावे।

(ततो वेदिकायां तुषकेशशर्करा भस्मादि
रहिताम्) पाधा वेदी को देख ले कुछ तृणादि अशुद्ध
वस्तु न हो।

(हस्तमात्र परिमितां चतुरस्त्रभूमिं कुशैः परिसमूह्य) एक हाथ भर चौकोर वेदी पर कुशा से तीन बार साफ करे ।

(तान्कुशान् ईशान्यां दिशि त्यजेत्)

उन कुशाओं को ईशान दिशाओं में रखदे ।

(गोमयोदकेनोपलिप्य)

वेदी पर गौ के गोबर से लीपे ।

स्त्रुवमूलेन प्रागग्र प्रादेशमात्रमुत्तरोत्तर) क्रमेण त्रिरुल्लिख्य) स्त्रुवे की जड़ से पूर्व को सिराकर बायें हाथ का अंगूठा और उसके पास की अंगुली को वेदी पर फैलाकर दक्षिण से उत्तर की ओर तीन लकीर खींचे ।

(उल्लेखन क्रमेणा नामिकांगुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य) कन की अंगुली के धोरे की अंगुली और अंगूठे से वेदी के बीच की मिट्टी उठाकर तीन बार ऊपर को उछाले ।

(जलेनाभ्युक्ष्य) फिर जल का छींटा लगावे ।

(नूतनकांस्यपात्रेणाग्निमानीय स्वाभिमुखं निदध्यात्) नवीन कांसी के पात्र में या सकोरे में

अग्नि मंगाकर अपने आगे रखले। उसको पात्र से ढककर उसका आह्वान करावे।

ओं मुखं समस्तदेवानां खांडवोद्यानदाहकम्
पूजितं सर्वयज्ञेषु अग्निमावाहयाम्यहम् ॥

पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे फिर हाथ जोड़कर यह मन्त्र पढ़े। (मन्त्रः)

ओं अग्निदूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपव्रते।
देवां आसादयादिह ॥

(हवन वेदिकावाहनम्)

फिर पाधा हवन की वेदी का आह्वान करावे।

विष्णुनालोकरूपेण जगतां पतिनो धृतां।
क्षमायुक्तां धरणीं च पृथ्वीमावाहयाम्यहम्।

(पूजनम्)

पूजन करे, सब सामग्री चढ़ावे, फिर हाथ जोड़े।

ओं स्वस्ति नः इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्योअरिष्ट-नेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

(अग्निस्थापन कुर्यात्समाधाय)

फिर पाधा वेदी पर अग्नि रखकर उसके ऊपर लकड़ी रखदे।

((वरणसंकल्पः)) एक पान पर रोली, चावल, सुपारी, फूल, कलावा, दक्षिणा, अंगोछा ये सब सामग्री रख के ब्रह्मा के वरण का संकल्प करे ।

अमुकगोत्रोहं अमुकशर्माहं अस्मिन् श्रीदुर्गा-हवनकर्मणि सांगताफलसिद्ध्यर्थं श्री महा-काली-महालक्ष्मी महासरस्वती देवताप्रीत्य-र्थमेभिः गंधाक्षतपुष्पचन्दनताम्बूलं पुंगीफल दक्षिणा वासोभिः अमुकगोत्रं अमुक शर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे ॥

जिसको ब्रह्मा बनाया हो उस ब्राह्मण के पान पर जो कलावा रक्खा है उससे पौंहची बांधे और ये मन्त्र पढ़े । (मन्त्रः)

ओं व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽप्नोति दक्षिणाम् । दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धाय सत्यमाप्यते ॥१॥

(तिलकं कुर्यात्) तिलक करे । (मन्त्रः)

ओं नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च । जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥२

(व्रतोस्माति प्रतिवचनम्)

यजमान पाधा से ऐसा कहे

(यथाविहितं कर्म कुरु)

जैसा शास्त्र में लिखा है वैसा ही सब कर्म कराओ।

(ओं करवाणीति ब्राह्मणो वदेत्)

पाधा ऐसा कहे जिस प्रकार शास्त्र में लिखा है उसी प्रकार सब कर्म कराऊंगा।

(ततऽग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनं दत्वा)

अग्नि से दक्षिण में ब्रह्मा के आसन के लिए एक पत्ता ढाक का धरे।

(तदुपरि प्रागग्रान् कुशानास्तीर्य)

उस पत्ते के ऊपर पूर्व को अगला भाग यानी फुलंगन कर कुशा फैलावे।

(ब्रह्माणमग्नि प्रदक्षिण क्रमेणानीया ऽत्र त्वं मे ब्रह्मा भवेत्यभिधाय)

कुशाओं का ब्रह्मा बनावे और ब्रह्मा को अग्नि की परिक्रमा कराकर उन कुशाओं के ऊपर उत्तर को मुंह करके।

(कल्पितासने उपवेशयेत्)

बिछाये हुए आसन पर रख दे।

(वरणसंकल्पः) एक पान पर रोली, चावल, सुपारी, फूल, कलावा, दक्षिणा, अंगोछा ये सब सामग्री रख के ब्रह्मा के वरण का संकल्प करे ।

अमुकगोत्रोहं अमुकशर्माहं अस्मिन् श्रीदुर्गा-हवनकर्मणि सांगताफलसिद्धयर्थं श्री महा-काली-महालक्ष्मी महासरस्वती देवताप्रीत्य-र्थमेभिः गंधाक्षतपुष्पचन्दनताम्बूलं पुंगीफल दक्षिणा वासोभिः अमुकगोत्रं अमुक शर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे ॥

जिसको ब्रह्मा बनाया हो उस ब्राह्मण के पान पर जो कलावा रक्खा है उससे पौंहची बांधे और ये मन्त्र पढ़े । (मन्त्रः)

ओं व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम् । दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धाय सत्यमाप्यते ॥१॥

(तिलकं कुर्यात्) तिलक करे । (मन्त्रः)

ओं नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च । जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥२

(व्रतोस्माति प्रतिवचनम्)

यजमान पाधा से ऐसा कहे

(यथाविहितं कर्म कुरु)

जैसा शास्त्र में लिखा है वैसा ही सब कर्म कराओ।

(ओं करवाणीति ब्राह्मणो वदेत्)

पाधा ऐसा कहे जिस प्रकार शास्त्र में लिखा है उसी प्रकार सब कर्म कराऊंगा।

(ततऽग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनं दत्वा)

अग्नि से दक्षिण में ब्रह्मा के आसन के लिए एक पत्ता ढाक का धरे।

(तदुपरि प्रागग्रान् कुशानास्तीर्य)

उस पत्ते के ऊपर पूर्व को अगला भाग यानी फुलंगन कर कुशा फैलावे।

(ब्रह्माणमग्नि प्रदक्षिण क्रमेणानीया ऽत्र त्वं मे ब्रह्मा भवेत्यभिधाय)

कुशाओं का ब्रह्मा बनावे और ब्रह्मा को अग्नि की परिक्रमा कराकर उन कुशाओं के ऊपर उत्तर को मुंह करके।

(कल्पितासने उपवेशयेत्)

बिछाये हुए आसन पर रख दे।

(ततः प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा, वारिणा परिपूर्य, कुशैराच्छाद्य, ब्रह्मणो मुखम वलोक्य, अग्नेरुत्तरत कुशोपरि निदध्यात्)

एक सकोरे में जल भरे फिर कुशाओं से ढके सकोरे में ब्रह्मा का मुंह दिखावे फिर अग्नि से उत्तर की तरफ कुशा के ऊपर सकोरा धरे।

(ततः परिस्तरणम्) कुशा फैलावे।

(बर्हिषश्चतुर्थभागमादाय)

१६ कुशा लेकर वेदी के चारों तरफ इस प्रकार धरे।

(आग्नेयादीशानान्तम्) ४

अग्निकोण से ईशान दिशा तक चार कुशा धरे।

(ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तम्) ४

ब्रह्मा से अग्नि तक चार कुशा धरे।

(नैऋत्याद्वायव्यान्तम्) ४

नैऋत्य से वायव्य तक चार कुशा धरे।

(अग्नितः प्रणीतापर्यन्तम्) ४

अग्नि से प्रणीतापात्र तक चार कुशा धरे।

(ततोऽग्नेरुत्तरतः) अग्नि से उत्तर की तरफ

(पश्चिम दिशि पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयम्)

पश्चिम में पवित्र छेदन के लिए क्रम से ३ कुशा धरे ।

(पवित्रकरणार्थं साग्रमनन्तर्गर्भं कुशपत्रद्वयम्)

पवित्र करने के लिए कुशा के बीच का कुशा निकालकर धरे ।

(प्रोक्षणी पात्रम्) एक प्रोक्षणी पात्र धरे ।

(आज्यस्थाली) घी का कटोरा धरे ।

(संमार्जनार्थं कुशत्रयम्) मार्जन के लिए तीन कुशा धरे ।

(उपयमनार्थं वेणीरूपकुशत्रयम्)

तीन कुशा गूंथकर उत्तर से पश्चिम को तरफ धरे ।

(प्रादेशमात्रं समिधिस्स्त्र)

अंगूठे से तर्जनी के बराबर तीन लकड़ी धरे ।

स्रुव आज्यम् स्रुवा तथा घृत धरे ।

(षट्पञ्चाशदुत्तरं यजमानमुष्टि शतद्वयावच्छिन्नतण्डुलपूर्णपात्रम्)

यजमान की दो सौ छप्पन मुट्ठी का पूर्णपात्र या एक लोटे या हंडले में चावल भरकर धरे ।

(पवित्रच्छेदनकुशानां पूर्वं पूर्वदिक्क्रमेणासादनीयम्) पवित्र छेदन कुशाओं से क्रमपूर्वक

पूर्व की तरफ धरी हुई सब कुशाओं को ठीक-ठीक धरी हुई देख लेवे।

(अथ तस्यामेव दिशि असाधारणवस्तुन्यूपकल्पनीयानि) अनन्तर उसी दिशा में और सब वस्तु स्थापन करनी चाहिए।

(ततः पवित्रच्छेदनकुशैः पवित्रे छित्वा प्रादेशमिति)

पवित्र छेदन कुशाओं से पवित्री की कुशा को अपने प्रादेशमात्र छेदन करे।

(ततः सपवित्रीकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे निधाय) पाधा पवित्री की कुशाओं सहित प्रणीता का जल हाथ से तीन बार प्रोक्षणी पात्र में डाले।

(अनामिकांगुष्ठाभ्यामुत्तराग्रे पवित्रे गृहीत्वा)

अनामिका अंगुली और अंगूठे के अग्रभाग से पवित्र की कुशा को पकड़े हुए—

(त्रिरुत्पवनम्)

प्रोक्षणी पात्र में से तीन बार ऊपर को छींटा दे।

(ततः प्रोक्षणीपात्रं सव्यहस्ते कृत्वा)

प्रोक्षणी पात्र को सीधे हाथ से बायें हाथ पर धरे।

(प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षणम्)

प्रणीता के जल से प्रोक्षणी पात्र में तीन बार उसी कुशा से छींटा दे।

(ततः प्रोक्षणी जलेन यथासादितवस्तुसेचनम्)

प्रोक्षणी पात्र के जल का सब जगह छींटा लगावे।

(ततोऽग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रं निदध्यात्) अग्नि के और प्रणीता के बीच में प्रोक्षणी पात्र रख दे।

(आज्यस्थाल्यामाज्य निर्वापः)

घी के कटोरे में घृत करके देखले कि घी में कुछ अशुद्ध वस्तु न हो।

(ततोऽधिश्रयणम्)

फिर घी का कटोरा अग्नि पर रखकर घी को ता ले।

(ततो ज्वलत्तृणादिना हविर्वेष्टयित्वा प्रदक्षिणक्रमेण वह्नौ तत्प्रक्षेपः)

कुशा को जला कर घी के कटोरे के चारों तरफ फिरावे फिर उसे अग्नि में डाल दे।

(पर्यग्निकरणम्) अग्नि को चेतन कर दे।

ततः स्रुवप्रतपनं कृत्वा) स्रुवे को अग्नि से तपा ले

(संमार्जनकुशानामग्रैरग्रं मध्यैर्मध्यं मूल-मूलं स्रुवं संमार्जयेत्)

समार्जन कुशाओं को लेकर स्रुवे के आदि (शुरु) में सिरे की कुशा, मध्य में बीच की और अन्त में आखीर की कुशा लगावे।

(प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य) प्रणीता के जल का स्रुवे पर छींटा लगावे।

(पुनःस्रुवंप्रतप्यदक्षिणतः कुशापरिनिदध्यात्)

स्रुवे को फिर तपाकर कुशा के ऊपर दक्षिण में धरे।

(आज्यस्याग्नेरवतार्य)

घी के कटोरे को अग्नि से उतार लेवे।

(पुनराज्ये प्रोक्षणीवदुत्पवनम्)

घी को तीन बार प्रोक्षणी की तरह फिर ऊपर को उछाले।

(अवेक्ष्य सत्युपद्रवे तन्निरसनं कृत्वा पुनः प्रोक्षणीवत्कुर्य्यात्)

घी को देखले कोई अपवित्र वस्तु तो न हो फिर प्रोक्षणी की तरह तीन बार ऊपर को उछाले।

(तत् उपयमनकुशान् वामहस्तेनादाय)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उपयमन जो कुशा हैं उन्हें बायें हाथ में उठाले।

(उत्तिष्ठन् प्रजापतिं मनसाध्यात्वा)

पाधा उठकर प्रजापति का ध्यान करे।

(तूष्णीमग्नौ घृताक्ता पालाशसमिधस्तिस्रः क्षिपेत्) पाधा बिना बोले ढाक की तीन लकड़ी घी में भिगोकर अग्नि में गेरे।

(तत उपविश्य) कर्मकर्ता बैठ जाय।

(सपवित्रः प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रदक्षिणक्रमेणाऽग्निपर्युक्षणं कृत्वा)

प्रणीता के जल से पवित्रे सहित क्रम से अग्नि के चारों ओर जल फेरे।

(पवित्रे प्रणीतापात्रे निधाय)

प्रोक्षणी में पवित्रा धर दे।

(पतितदक्षिण जानु) सीधा घोंटा झुका ले।

(कुशेन ब्रह्मणान्वारब्धः)

घोंटे से लेकर ब्रह्मा तक कुशा फैलावे।

(समिद्धतमेऽग्नौ स्रुवेणाज्याहुति जुहोति)

स्रुवे से अग्नि में घी गेरे।

(तत्राधारादारभ्य द्वादशाहुतिषु तत्तदाहुत्य-नन्तरं स्रुवावस्थितहुत शेषघृतस्य प्रोक्षणी-पात्रे प्रक्षेप:)

आहुति देने से स्रुवे का बचा हुआ घी प्रोक्षणी पात्र में भी डालता जाय ।

(अथ स्वाहा) अब पाधा हवन करावे ।

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये इदन्न मम ।। इति मनसा ।। ओ३म् इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय इदन्न मम । इत्याधारौ ।। ओ३म् अग्नये स्वाहा । इदमग्नये इदन्न मम । ओ३म् सोमाय स्वाहा । इदं सोमाय इदन्न मम । इत्याज्यभागौ । ओ३म् भूः स्वाहा । इदमग्नये इदन्न मम ।। ओ३म् भुवः स्वाहा। इदं वायवे इदन्न मम । ओ३म् स्वः स्वाहा इदं सूर्याय इदन्न मम । एता महाव्याहृययः। ओ३म् त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषा थ्ठंसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्

स्वाहा ।। इदमग्निवरुणाभ्याम् इदन्न मम ।
ओ३म्। सत्वन्नो अग्नेवमोभवोती वेदिष्ठो वरुण
थ्ठंररराणो वीहिमडीकथ्ठं सुहवा नएधि स्वाहा ।
(इदमग्निवरुणाभ्याम्)
ओ३म् अयाश्चाग्नेस्य नभिशस्ति पाश्च
सत्यमित्वमया असि । अया नो यज्ञ
वहास्यया नो धेहि भेषज थ्ठं स्वाहा इदमग्-
नये इदन्न मम । ओ३म् ये ते शतं वरुणये
सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः ।
तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु
मरुतः स्वर्काः स्वाहा । इदं वरुणाय पवित्रे
विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुदभ्यः
स्वर्केभ्यः इदन्न मम ।। ओ३म् उदुत्तम वरुण
पाशमस्मदवाधमं विमध्यम थ्ठं श्रथाय ।
अथावयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये
स्याम स्वाहा ।। इदं वरुणाय इदन्न मम ।
(एता सर्वप्रायश्चित्तसंज्ञकाततोऽन्वारब्ध विना)
ब्रह्मा के घोंटे से कुशा को हटाले ।

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये इदन्न मम । इति मनसा प्राजापत्यम् ॥ ओ३म् अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा । इदमग्नये स्विष्टकृते । ओ३म् गणपतये स्वाहा । इदं गणपतये ॥ ओ३म् ब्रह्म जज्ञानं प्रथमम्पुर-स्ताद्विसीमतः० स्वाहा । इदं ब्रह्मणे इदन्न मम । ओ३म् विष्णो रराट्० स्वाहा । इदं विष्णवे इदन्न मम । ओ३म् नमः शम्भवाय च० स्वाहा ॥ इदं शम्भवाय इदन्न मम ॥

(अथ नवग्रह होमः)

नीचे लखे मन्त्रों से नवग्रहों की आहुति दे ।

(समिद्धामं कुर्यात्)

आखे की लकड़ी की आहुति दे, इस मन्त्र से--

* ओ३म् आकृष्णेन० स्वाहा इदं सूर्याय इदन्न मम ।

ढाक की लकड़ी की आहुति दे ।

ओं इमंदेवा अ० । इदं चन्द्राय इदन्न मम ।

कत्थे की लकड़ी की आहुति दे ।

नोट—उक्त ७ प्रकार की लकड़ी घी में भिगोकर अग्नि में छोड़ें ।

* जहां संकेत का चिह्न है वे मंत्र पहले आ चुके हैं ।

ओं अग्निमूर्धा० । इदं भौमाय इदन्न मम ।

चिरचिटे की लकड़ी की आहुति देवे ।

ओं उद्बुध्यस्वाग्ने०। इदं बुधाय इदन्न मम ।

पीपल की लकड़ी की आहुति दे, इस मन्त्र से—

ओं बृहस्पतये० । इदं बृहस्पतये इदन्न मम ।

गूलर की लकड़ी की आहुति दे, इस मन्त्र से--

ओं अन्तात्परि० । इदं शुक्राय इदन्न मम ।

जांड की लकड़ी की आहुति दे, इस मन्त्र से--

ओं शन्नोदेवी०। इदं शनिश्चराय इदन्न मम ।

दूब की नाल की आहुति दे, इस मन्त्र से--

ओं कयानश्चित्र० । इदं राहवे इदन्न मम ।

कुशा की आहुति दे, इस मन्त्र से--

ओं केतु कृण्वन्न०इदं केतवे इदन्न मम । ओं अधिदेवेभ्य स्वाहा । प्रत्यधिदेवेभ्यः स्वाहा । पंचलोकपालेभ्यः स्वाहा । दशदिक्पालेभ्यः स्वाहा । वरुणदेवाय स्वाहा । वास्तुकाय स्वाहा । गौर्य्यादिषोडश मातृभ्यः स्वाहा । प्रधान देवाय स्वाहा । सर्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ॥

(अथ चारु आह्वानम्)

ओ३म् एतन्ते देव० । इस मन्त्र से चरु की प्रतिष्ठा कर पूजन करे, सामग्री चढ़ावे, हाथ जोड़े ।

ओ३म् स्वस्ति न इन्द्रो० (ब्राह्मणवरणसंकल्पः)

एक पान पर रोली व कलावा, चावल, फूल, हार, सुपारी, अंगोछा, दक्षिणा धर कर जो ब्राह्मण आहुति दे उसके वरण का संकल्प करे ।

अद्याऽमुकगोत्रोहं अमुक शर्म्माहं अस्मिन् श्रीदुर्गाहवन कर्मणि सांगताफलसिद्ध्यर्थं श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती प्रीत्यर्थं मेभिर्गंधाक्षत पुष्पचन्दनताम्बूलं पुंगीफलंदक्षिणा वासोभि अमुक गोत्रमुमुक-शर्माणं होतृत्वेन त्वामहंवृणे ॥

पान पर से कलावा लेकर पौंहची बांधे । (मन्त्रः)

ओं व्रतेन दीक्षामाप्नोति० । तिलक करे ।

ओं नमो ब्रह्मण्यदेवाय० ॥ (पुनः चरुहोमः)

पाठ करने वाला जल चावल लेकर संकल्प करे ।

ओं तत्सद् विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ओं नमः परमात्मने श्रीपुराणपुरुषोत्तमायाद्य श्री-

ब्रह्मणोऽन्हि द्वितीये प्रहरार्द्धे श्रीश्वेतबाराह-
कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे
आर्य्यावर्तान्तर्गते ब्रह्मावर्तैकदेशे पुन्यक्षेत्रे
वेदोक्तफल प्राप्तिकामसिद्ध्यर्थं वर्तमान
सम्वत्सरे अमुकायने भास्करे अमुकगोला-
वलम्बने ऽमुकपक्षे ऽमुकतिथौ ऽमुकवासरे
ऽमुकगोत्रोहममुकशर्म्माहं सकलपापक्षयपूर्वक
सकलमंगलप्राप्त्यै सर्वारिष्टनिवारणार्थं सर्वत्र
हर्षविजयद्विपदे चतुष्पदे पशुबांधव कामः श्री
महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती देवताप्रीतये
आदौ गणेशं मालया कवचार्गगलकीलकैः
रात्रिसूक्तं च नवार्ण आद्यन्तयोः पद्मसूक्तं
च मार्कण्डेय उवाच इत्यारम्भ सावर्णिर्मवि-
ता मनुरित्येतं सप्तशतीपाठमहं करिष्ये ॥

पहिले एक माला गणेश जी के मन्त्र को जप कर चरु की आहुति दे ।

(ओ३म् गणपतये स्वाहा)

दुर्गा के तीनों कवच का पाठ करे। फिर इस मन्त्र से एक माला की आहुति दे। (मन्त्रः)

(ओं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा) ओं मां माले महामाये सर्वशक्ति स्वरूपणि चतुवर्गस्त्वयि स्तस्तस्मान्ने सिद्धिदा भव। ओं अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे जय काले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये। ओं अक्षमालाधिपतये सुसिद्धि देहि देहि सर्व मन्त्रार्थ साध्य २ सर्वसिद्धि परिकल्पय २ मे स्वाहा॥

फिर देवी-सूक्त का पाठ करे और (आहुति न दे) फिर दुर्गा का पाठ करे आहुति दे जब पहला अध्याय पूर्ण हो जावे पाधा ये मन्त्र पढ़े--

मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे (देवीमहात्म्य सत्याः सन्तु मम यजमानस्य कामाः) जगदम्बार्पणमस्तु॥

ऐसा बोलकर जल छोड़ दे।

स्रुवे पर १ पान १ सुपारी चरु सब सामग्री धरकर आहुति वाला खड़ा हो जाय, यजमान उसके सीधे कंधे पर अपना सीधा हाथ रखले पाधा ये मन्त्र पढ़े--

ओं अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन । ससस्त्यः श्वकः सुभद्रिकां कापीलवासिनीं स्वाहा ।।

अग्नि में छोड़दे फिर पांच आहुति घी की देवे ।

ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ उदानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा ।।

(अग्नि में) कुशा से जल का छींटा लगावे ।

(ओं आपः शिवः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्ते कृण्वन्तु भेषजम्)

इस प्रकार सब अध्यायों के अन्त में जब पाठ समाप्त हो तब तक एक माला निर्वाण मन्त्र की आहुति देवे । (मन्त्रः)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा ।

फिर हवन के दशांश का एक माला तर्पण करे और तर्पण के दशांश का मार्जन करे । एक बर्तन में जल भरकर उसमें दूध और गंगाजल मिलाकर फूल या दूर्बा लेकर आहुति देने वाला अपने हाथों की अंजुलि भरकर अंगुलियों के ऊपर को जल छोड़े । इसे तर्पण कहते हैं । अग्नि में छींटा लगाने को मार्जन कहते हैं ।

तीसरे अध्याय के अन्त में शहद की आहुति देवे। (मन्त्रः)

गर्ज गर्ज क्षणं मूढ मधु यावत्पिबाम्यहम्।
मया त्वय हते ऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याश देवता स्वाहा॥

आठवें अध्याय के अन्त में लाल चन्दन की आहुति देवे। (मन्त्रः)

नीरक्तश्च महीपाल रक्तबीजो महासुरः।
ततस्ते हर्षमतुलमवापुस्त्रिदशा नृप स्वाहा॥

ग्यारहवें अध्याय में खीर, हलवा या पेड़ा की आहुति देवे। (मन्त्रः)

सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते।
स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोस्तुते स्वाहा॥

इस मन्त्र से गिलोय की आहुति देवे।

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु मामान्सकलानभीष्टान्। त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्या श्रयतां प्रयान्ति स्वाहा॥

इस मन्त्र से काली मिर्च या सफेद सरसों की आहुति देवे—

सर्वबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि एक-

मेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् स्वाहा ॥

इस मन्त्र से पालक अथवा बथुवे की आहुति देवे ।

शाकम्भरीति विख्यातिं तदा यास्याम्यहं भुवि । तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम् स्वाहा ॥

इस मन्त्र से अनार की आहुति देवे—

रक्तदन्ता भविष्यन्ति दाडिमी कुसुमोपमम् ॥

ग्यारहवें अध्याय के अन्त में सफेद चन्दन व कपूर की आहुति देवे । (मन्त्रः)

भ्रामरीति च मां लोकास्ता स्तोष्यन्ति सर्वतः ।

विसर्जन मन्त्र--

ओं त्वं माले सर्व देवानां प्रीतिदा शुभदा भव । शिवं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा इति माला शिरसि निधाय प्राणाना-यस्य न्यासं कृत्वा विसर्जयेत् ॥

(दशदिक्पालेभ्यो बलिं दद्यात्)

वेदी के चारों तरफ दस दिशाओं में दस दीवे धर कर उनमें दस घी की बत्ती बाले । दही, उड़द, सिन्दूर ये भी उसके पास रक्खे ।

(प्रतिष्ठां कृत्वा) चावल लेकर प्रतिष्ठा करे ।
ओं एतन्ते देव० ।। चावल छोड़े, पूजन करे ।

सब सामग्री चढ़ावे फिर हाथ जोड़े । (मन्त्र:)

ओं इन्द्रो वह्नि पितृपतिर्नैऋतो वरुणो मरुत कुबेर ईशः पत्तयः ब्रह्मानन्त स्तथैव च ॥१॥ फिर संकल्प करे ।

अमुक गोत्रोहं ऽमुकशर्म्माहं भो दशदिक्-पालाः ! दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्ति-कर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता वरदो भव ॥

(क्षेत्रपालेभ्यो बलिं दद्यात्)

आटे का एक दीवा चौमुखा बनाकर चार बत्ती गेर कड़वे तेल में बाले । दही, उड़द की दाल, सिन्दूर, स्याही, पैसा ये उसके पास डाल दे, चावल लेकर प्रतिष्ठा करे । एतन्ते देव० ॥
(पूजनं कृत्वा) पूजन करे फिर हाथ जोड़े ।

ॐ करकलितकपालः कुन्डली दण्ड पाणि-

स्तरुणतिमिरनील व्याल यज्ञोपवीती ।
क्रतुसमय सपर्याविघ्न विच्छेद हेतुर्जयति
वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ॥ ॐ
क्षेत्रपाल शाकिनी डाकिनी भूत प्रेत बैताल
पिशाच सहिताय इमं बलिं समर्पयामि ॥
(संकल्प) जल, चावल, पैसा ले ।
अमुकगोत्रोहं ऽमुकशर्म्माहं भो क्षेत्रपाल !
दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम यजमानस्य
सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुष्कर्ता क्षेम-
कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव ॥

दीवे को वहां से हटा दे । फिर उस जगह जल का छींटा लगावे । (मन्त्रः)

(ॐ अपवित्रः पवित्रो वा) (पूर्णाहुतिं दद्यात्)

स्रुवे पर घी का भरा नारियल और चुरु धरे फिर चावल लेकर प्रतिष्ठा करे । ॐएतन्ते देव० ॥

चावल छोड़े पूजन करे, सब सामग्री चढ़ावे फिर हाथ जोड़े । (मन्त्रः)

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा० ॥

फिर उसको लेकर खड़ा हो जाय, पाधा यजमान

के सीधे कन्धे पर अपना बायां हाथ रखे और यजमान अपने सीधे हाथ से कुछ दक्षिणा ले। (मन्त्रः)

ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानर मृत आजातमग्निम् ॥ कविꣳ सम्राजमतिथिं जनना मासन्ना पात्रं जनयंत देवाः स्वाहा ॥

यजमान नारियल को अग्नि में धरदे फिर उसके ऊपर घी की धार छोड़े इस मन्त्र से। (मन्त्रः)

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्र धारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः ॥

(त्र्यायुष्करणम्)

स्रुवे से हवन की भस्मी उठाकर अनामिका से पहिले अपने लगावे फिर यजमान के लगावे। (मन्त्रः)

त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे। माथे के ऊपर। कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम्। गले में। यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिणबाहुमूले। सीधे कन्धे पर। तन्नो अस्तु त्र्यायुषमिति हृदै। छाती से लगावे। (संस्रवप्राशनम्) यजमान स्रुवे

नोट—यजमान के भस्मी लगाते समय तन्नो की जगह तत्ते कहे।

से जरा सा घी अनामिका अंगुली से लगाकर खाले।

(आचमनम्) फिर आचमन करे। (मन्त्रः) ॐ गंगाविष्णु ३ त्रिवारं पठेत्। (हस्तो प्रक्षाल्य) हाथ धो डाले। (मन्त्रः) ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वा० ॥ यह मन्त्र पढ़कर यजमान के ऊपर प्रणीता के जल का छींटा दे। ॐ दुर्मित्रिया स्तस्मै सन्तु यस्माद्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्तः ॥ (इति मंत्रेणेशान्यां प्रणीतांन्युब्जी कुर्यात्)

इस मन्त्र से प्रणीतापात्र को ईशान दिशा में उल्टा करदे।

(ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम्) यजमान पूर्ण पात्र पर एक मुद्रिका रख कर संकल्प करे।

अमुकगोत्रोहं अमुकशर्माहं अस्मिन् श्रीदुर्गा हवन कर्मणि सांगताफलसिध्यर्थं श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी महासरस्वती देवता प्रीत्यर्थ-मिदम्पूर्णपात्रं प्रजापति दैवतं यथा नामगो-त्रायऽमुक शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

जो ब्राह्मण ब्रह्मा बना है उसको दे दे और उसकी दान प्रतिष्ठा का संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रोहं अमुकनाम शर्म्माहं दुर्गा-होम कर्मणि कृताकृतावेक्षण ब्रह्मकर्मप्रतिष्ठा-सिद्ध्यर्थंमिदं पूर्णपात्रं अमुक गोत्राय-ऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

यह दक्षिणा भी उसी को दे दे ।

(ब्रह्मग्रन्थि विमोकः) ब्रह्मा की गांठ खोल दे । (अथबर्हिहोमः) वेदी के चारों तरफ की सब कुशा उठाकर अग्नि में डाल दे । (मन्त्रः)

ओं देवा गातु विदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत ऽइमम्भ्देव यज्ञꣳ स्वाहा वातेधाः स्वाहा ॥

* आरती दुर्गा जी की *

जय अम्बे गौरी मैय्या जय श्यामा गौरी ।
तुमको निश दिन ध्यावें ब्रह्मा विष्णु हरि ॥ जय०
मांग सिंदूर विराजे, टीकौ मृग मद कौ ।
उज्जवल से दोऊ नैंना, चन्द्र वदन नीकौ ॥ जय०
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै ।
रक्त पुष्प गल माला, कठन पर साजै ॥ जय०
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती ।

आहुति प्रमाण—बीच की दो अगुली और अंगूठा लगाकर एक आहुति ६ माशे के प्रमाण से देना चाहिए ।

कोटिक चन्द्र दिवाकर सम राजत ज्योती ।। जय०
केहरि वाहन राजत, खड़ग खप्पर धारी ।
सुर नर मुनिजन सेवत, तिनके दुःखहारी ।। जय०
शुम्भ निशुम्भ बिडारे महिषासुर घाती ।
धूम्र विलोचन नैंना निश दिन मद माती ।। जय०
चण्ड-मुण्ड संहारे शोणित बीज हरे ।
मधु कैटभ दोऊ मारे, सुर भय हीन करे ।। जय०
चौंसठ योगिनी मंगल गावें,नृत्य करत भैरूं ।
बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरूं ।। जय०
ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी ।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी ।। जय०
भुजा चार अति शोभित, खड़ग खप्परधारी ।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर नारी ।। जय०
ब्रह्मादिक इन्द्रादिक, रुद्रादिक ध्यावें ।
सुर नर मुनिजन सेवत, वांछित फल पावें ।। जय०
दो भुज चार चतुर्भुज, अष्ट भुज ते सोहें ।
तीनों रूप निरखता, त्रिभुवन जन मोहें ।। जय०
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती ।
मालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योति ।। जय०
रामस्वरूप तुम्हारो चेरो,निशदिन गुण गाता ।
सुन्दर श्यामा गौरी, त्रिलोकी माता ।। जय०
अम्बे जी की आरती जो कोई गावे ।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पति पावे ।। जय०

पश्चात् बूरा में पांचों मेवा मिलाकर भगवती को भोग लगावे और पांच आहुति अग्नि में छोड़े। (मन्त्र)

प्राणाय स्वाहा ।। अपानाय स्वाहा ।। उदानाय स्वाहा ।। व्यानाय स्वाहा ।। समानाय स्वाहा ।।

जल की तीन आचमनी अग्नि में छोड़े। फिर अग्नि की परिक्रमा करे।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ।
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे ।।

(प्रार्थना) अपराध सहस्राणि क्रियन्तऽहर्निशंमया दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर ।। आह्वानं न जानामि न जानामि विसर्जनम् । पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरः अन्यथा शरणान्नति त्वमेव शरणम् मम । तस्मात्कारुण्य भावेनरक्षत्वं परमेश्वर ।। एकं चण्डी रवौ सप्त तिस्रो दद्यात् गणेश्वरः । चत्वारि केशवं प्रदद्याच्छिवस्यार्द्ध प्रदक्षिणा ।।१।।

अर्थ--देवी की १ परिक्रमा करे, सूर्य की ७, गणेश की ३, विष्णु की ४, शिव की आधी परिक्रमा करनी चाहिए। फिर प्रसाद बंटवा दे।

कुम्भात्तथैव जलेन यजमाणं सिंचति ।

फिर कलशे के जल का यजमान के ऊपर आम के पत्तो से छींटा दे । (मन्त्रः)

आपो हिष्ठा मयोभुव स्तान ऊर्ज्जे दधातन महेरणाय चक्षसे ॥१॥ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेहनः। उशतीरिव मातरः॥२ तस्मा अरङ्गमामवो यस्यक्षयाय जिन्वथ । आपो जन यथाचनः ॥३॥

यजमान के तिलक करे ।

आदित्या वसवोरुद्रा विश्वे देवा मरुद्गणाः । तिलकं ते प्रयचछन्तु धर्म कामार्थसिद्धये ॥

(कर्मकर्ता सुवर्ण दक्षिणा संकल्पः)

अमुकगोत्रोहं अमुक शर्म्माहं श्रीदुर्गाहवन-कर्मणि सांगताफलसिद्ध्यर्थं श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवता प्रीत्यर्थं मेतत्कर्म करियित्रे अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे आचार्याय इमां स्वर्णादि प्रक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

हवन कराने वाले को दे दे। इसकी दान प्रतिष्ठा का संकल्प करे।

अमुक गोत्रोहं ऽमुकशर्म्माहं अस्मिन् श्री-दुर्गाहवन साङ्गताफलसिद्ध्यर्थं श्रीमहा-कालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती देवता प्रीत्यर्थं कर्म कर्त्रे दानप्रतिष्ठादक्षिणा आचार्यायण तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥

हवन कराने वाले को दे दे। (आहुति चन्द्रमयी दक्षिणा संकल्पः) आहुति देने वालों को दक्षिणा का संकल्प करे।

अमुकगोत्रोहंऽमुकशर्म्माहं अस्मिन् श्रीदुर्गा-हवनकर्मणि सांगताफलसिद्ध्यर्थं श्रीमहा-कालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताप्रीत्यर्थमि-मा आहुति रजतदक्षिणां अमुक गोत्रेभ्यो ऽमुक नाम शर्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥

यह दक्षिणा आहुति देने वाले को दे दे। दान प्रतिष्ठा का संकल्प करे।

अमुकगोत्रोहं ऽमुक शर्म्माहं अस्मिन् श्री-दुर्गाहवनसांगताफलसिद्ध्यर्थं श्रीमहाकाली

महालक्ष्मी महासरस्वतीदेवताप्रीत्यर्थं आहुतिदानप्रतिष्ठा ताम्रमयि दक्षिणा अमुक गोत्रेभ्यो अमुक नाम ब्राह्मणेभ्यो तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥

पाधा यह दक्षिणा आहुति देने वाले को दिलवादे । फिर यजमान को नारियल, मीठा, फूल लेकर आशीर्वाद दे । (मन्त्रः)

ओं मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः । शत्रुणां बुद्धिनाशो अस्तु मित्राणामुदयोस्तु वः ॥

नारियल, मीठा और फूल यजमान की गोद में देकर यजमान के तिलक करे । (मन्त्रः)

ओं स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्तिः नस्तार्क्ष्यो अरिष्ट-नेमिः स्वस्तिः नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

फिर यजमान गणेश व लक्ष्मी जी को बचा कर सब देवताओं पर चावल छोड़े । (मन्त्रः)

ब्रह्माण्डे च गता ब्रह्मा कैलाशे च महेश्वरः । बैकुण्ठे च गतो विष्णुर्देवाः स्वर्गे च

संस्थिता: ॥१॥ सूर्य: कलिंगदेशे च यामुनं चंद्रमागत: । मंगलश्चाप्ययोध्यायां कैलाशे च बुधोगत: ॥२॥ सिन्धुदेशे गतो जीव: शुक्रो भोजकटे तथा । शनि सौराष्ट्रदेशे च राहुर्देशे मलेच्छगे ॥३॥ केतुश्च पर्वते देशे पाताले पन्नागा गता: सर्व गच्छन्तु स्वस्थाने यजमानस्य हिताय च ॥४॥ लक्ष्मीर्गणपतिश्चैव यजमानगृहे स्थितौ । गच्छ गच्छ सुर श्रेष्ठ ! स्वस्थानं परमेश्वर । यत्र ब्रह्माऽदयो देवास्तत्र गच्छ हुतासन !

यजमान ऐसा कहे कि गणेश जी और लक्ष्मी जी हमारे यहां रहो और सब देवता अपने-अपने स्थान को पधारें, फिर हाथ जोड़े ।

रूपं देहि जयं देहि, यशो देहि द्विषो जेहि ।
पुत्रान्देहि धनं देहि सर्वान्कामाश्च देहि मे ।
प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ।
स्मरणादेव तद्विष्णो: सम्पूर्णस्यादिति श्रुत: ।

॥ इति हवन-पद्धति समाप्तम् ॥

मुद्रक : भारतीय प्रेस, ३०० स्वामीपाड़ा, मेरठ ।